राष्ट्रीय शिक्षा नीति –2020 : क्रियान्वयन
रणनीतिक योजनाएं एवं लक्ष्य

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

(केंद्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 2009 के तहत स्थापित एक केंद्रीय विश्वविद्यालय)

प्रस्तावना

हमारे कुलपति के दूरदर्शी नेतृत्व में गुरु घासीदास विश्वविद्यालय ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 को एक अभिनव तरीके से लागू करने के लिए अपनी यात्रा शुरू की है, जहाँ राष्ट्रीय विशेषज्ञों सहित संरक्षक श्री अतुल कोठारी जी और माननीय कुलपति प्रो आलोक चक्रवाल जी के साथ चर्चा एवं शिक्षकों, हितधारकों के बीच निरंतर मंथन के बाद नीति की इस रणनीतिक योजनाओं एवं लक्ष्य को अंतिम रुप दिया गयाI

हमारे लिए, राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 के कार्यान्वयन का मतलब अनिवार्य रूप से राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 में परिकल्पित गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा प्रदान करना है। इस प्रकार, व्यक्तिगत ज्ञान, सामाजिक जुड़ाव और मूल्यवर्धन के माध्यम से ज्ञान को आर्थिक विकास में बदलना मूल लक्ष्य रहा है। योजनाओं और लक्ष्यों को तैयार करते समय रणनीति तैयार की गई है ताकि उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में बेहतर प्रदर्शन किया जा सके, जो शिक्षार्थियों को सक्षम करने के लिए महत्वपूर्ण है। रणनीतिक योजनाओं और लक्ष्यों में सुझाए गए परिवर्तन ज्ञान उत्पादन में प्रभावी भागीदारी, ज्ञान अर्थव्यवस्था में योगदान के साथ-साथ वैश्वीकृत दुनिया में राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा में गुणात्मक सुधार सुनिश्चित करते हैं। यह सुनिश्चित करने का हमारा प्रयास रहा है कि शिक्षार्थी वैश्विक और राष्ट्रीय मानकों के लिए उपयुक्त कौशल से लैस हों और एक ऐसा पारिस्थितिकी-तंत्र तैयार करें, जो शिक्षार्थियों के लिए बेहतर अवसर प्रदान करे। परिणामोन्मुख उच्च शिक्षा को संस्थागत कैसे बनाया जाए, इस पर मैराथन विमर्श के परिणामस्वरूप सीखने के परिणाम-आधारित पाठ्यक्रम योजना और विकास हुआ है, जहां यूजीसी के एलओसीएफ को राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 के साथ संरेखित करने के लिए संशोधित किया गया है और ज्ञान क्षेत्र की समझ, समस्या के समाधान दृष्टिकोण, मूल्यों का निर्माण, कौशल और नवीन दृष्टिकोण में उत्कृष्ट उपलब्धियों के आधार पर शिक्षार्थियों की डिग्री प्रदान की गई है। हमने शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं को एकीकृत करने, एमओओसी (मूक) /ओडीएल के माध्यम से शिक्षार्थियों तक पहुँचने के साथ-साथ हमारे विश्वविद्यालय से ओडीएल/एमओओसी (मूक) के लिए गुणवत्तापूर्ण सामग्री विकसित करने के लिए प्रौद्योगिकी के उपयोग में बेहतरी के लिए रणनीतियों को भी शामिल किया है। सामाजिक समस्याओं को हल करने और अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए नवाचार के माध्यम से अनुसंधान को मूल्यवर्धन में अनुवाद करने के साथ-साथ ध्यान केंद्रित किया गया है। अंतर-विषयक क्षेत्रों की पहचान की गई है और एलओसीएफ आधारित स्नातक कार्यक्रम के माध्यम से बहु-विषयक पारिस्थितिकी तंत्र विकसित किया गया है और 04 वर्षों के पाठ्यक्रमों में प्रवेश-निर्गम प्रावधानों को शुरू करने के प्रयास चल रहे हैं, जिसकी प्रमुख विशेषता समग्र और लचीली शिक्षा है।

इन रणनीतियों के माध्यम से लघु-मध्य और दीर्घकालिक आधार पर हम राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 के कार्यान्वयन की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं।

टास्क फोर्स की ओर से, हम अपने पथ प्रदर्शक और टास्क फोर्स के संरक्षक के प्रति अपनी गहरी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं, जिन्होंने हमें लक्ष्यों के प्रति जागरूक किया और राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 को लागू करने में हमारा मार्गदर्शन किया। हम अपने प्रेरणा स्रोत के भी ऋणी हैं, जिनकी निरंतर प्रेरणा, दूरदर्शी नेतृत्व और टीम भावना ने हम सभी को टीम के माहौल में मुखर होने और काम करने के लिए प्रेरित किया है। हम कुलसचिव प्रोफेसर शैलेंद्र कुमार जी, टास्क फोर्स में हमारे सभी सहयोगियों के साथ-साथ मानदंडवार उप-समितियों के सभी सम्मानित सदस्यों और रचना, मुद्रण और आयोजन समितियों के सभी सदस्यों और उन सभी लोगों के भी आभारी हैं जिन्होंने गुरु घासीदास विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 को लागू करने के लिए इन मूल्यवान दिशानिर्देशों को सामने लाने में अपना योगदान दिया है।

प्रो. पी.के. बाजपेयी

विषय-सूची

• प्रस्तावना

• कुलपति का संदेश

• संरक्षक का संदेश

• कुलसचिव का संदेश

• संयोजक, राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 टास्क फोर्स का प्राक्कथन

• राष्ट्रीय शिक्षा नीति टास्क फोर्स समिति

 राष्ट्रीय शिक्षा नीति कार्यान्वयन समय-सीमा

 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 कार्यान्वयन का सारांश

संस्थागत विशिष्ट रणनीतिक योजनाओं और लक्ष्यों की आवश्यकता

 राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 का कार्यान्वयन: रणनीतिक योजना की रूपरेखा

I - बहुविषयक और समग्र शिक्षा

II - उच्च शिक्षा में समता, पहुंच और समावेशन

III - लचीली, समग्र और बहुविषयक शिक्षा प्रदान करना

IV - शिक्षक का उन्नयन और नवाचारी शिक्षक के रूप में उनकी भूमिका सुनिश्चित करना।

V - सीखने के मिश्रित मोड के लिए प्रौद्योगिकी सक्षम शिक्षण और क्षमता निर्माण

VI - भारतीय ज्ञान प्रणाली, भाषा, मूल्यों और संस्कृति को वर्तमान ज्ञान प्रणाली के साथ एकीकृत करना

VII - उच्च शिक्षा का अंतरराष्ट्रीयकरण

VIII - रैंकिंग के साथ शिक्षण अनुसंधान और नवाचार का तालमेल

* राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बारे में जागरूकता पैदा करने के प्रयास

* राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 के कार्यान्वयन में सर्वोत्तम कार्य

संलग्नक I: राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 कार्यान्वयन टास्क फोर्स का गठन

संलग्नक II: रणनीतिक योजनाएँ एवं लक्ष्य तैयार करने के लिए क्षेत्र विशेष उप-समितियों का गठन

संलग्नक III: वेबिनार और सेमिनार

(ए): वेबिनार: नीति आयोग और बीएसएम - भारतीय ज्ञान प्रणाली की भूमिका, सांस्कृतिक मूल्य...

(बी) एलओसीएफ पर कार्यशाला - प्रतिवेदन

(सी) राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 पर संगोष्ठी- उच्च शिक्षा में कार्यान्वयन रणनीति

(डी) राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 पर संगोष्ठी- उच्च शिक्षा का परिवर्तन

(ई) गुरुकुल शिक्षा-सांस्कृतिक मूल्यों के योगदान पर संगोष्ठी ......

(एफ) समकालीन शोध में वैचारिक साहित्यिक चोरी पर वेबिनार

अनुलग्नक IV: वेबिनार का विवरण, राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 से संबंधित कार्यक्रम

अनुलग्नक V: शिक्षा मंत्रालय को प्रस्तुत गुरु घासीदास विश्वविद्यालय की सर्वोत्तम कार्यों का प्रतिवेदन

अनुलग्नक VI: तकनीकी/इंजीनियरिंग शिक्षा में राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर सलाहकार एनपीआईयू, नई दिल्ली को पत्र

अनुलग्नक VII: राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 के कार्यान्वयन की प्रगति पर संयुक्त सचिव, यूजीसी, नई दिल्ली को पत्र

अनुलग्नक VIII: मूक(MOOC) के पाठ्यक्रम को विश्वविद्यालय द्वारा अंगीकृत करना और दिशा निर्देश

अनुलग्नक IX: स्नातक कार्यक्रमों में एलओसीएफ विकास

कुलपति का संदेश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी–2020) एक बहुत विमर्श किया हुआ और प्रभावी परिवर्तनकारी सुधार है। साथ ही राष्ट्र निर्माण की दिशा में एक बहुत ही सकारात्मक कदम और आर्थिक विकास और अकादमिक उत्कृष्टता के लिए ज्ञान को मूल्य परक शिक्षा में बदलने के लिए रोडमैप है। इस नीति में कई तत्व हैं जो शिक्षार्थियों को रोमांचक अनुभव प्रदान करने में सक्षम हैं और इसका उद्देश्य 21 वीं सदी के कौशल और नवाचार, जटिल समस्याओं के समाधान, रचनात्मकता और डिजिटल साक्षरता को बढ़ाने के साथ-साथ प्राचीन भारतीय ज्ञान और सांस्कृतिक विरासत के साथ लोगों को शिक्षित करना है, ताकि उनके व्यक्तित्व को भारतीय मूल्यों और लोकाचार में गहराई से विकसित किया जा सके। गुरु घासीदास विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 को सही मायने में लागू करना हमारी प्राथमिकता रही है। हमने राष्ट्रीय शिक्षा नीति –2020 कार्यान्वयन टास्क फोर्स नामक एक कार्यान्वयन समिति का गठन करके विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के कार्यान्वयन के लिए कई पहल की हैं। यह खुशी की बात है कि टास्क फोर्स ने यूजीसी और शिक्षा मंत्रालय द्वारा समय-समय पर सुझाए गए राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के विभिन्न प्रावधानों को लागू किया है, जिसमें बहु-विषयक दृष्टिकोण को अपनाना, बहु प्रवेश-निर्गम विकल्पों को शामिल करना, संशोधित एलओसीएफ आधारित स्नातक पाठ्यक्रम लागू करना एवं त्रिपक्षीय अनुबंध में राष्ट्रीय शिक्षा नीति –2020 लक्ष्यों को शामिल करना है। इसके अलावा टास्क फोर्स ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति –2020 के बारे में जागरुक करने के साथ-साथ मिश्रित मोड लर्निंग को लागू करने, गुणवत्तापूर्ण शिक्षण सामग्री बनाने आदि के लिए शिक्षकों की क्षमता बढ़ाने के लिए कई महत्वपूर्ण कार्यक्रम आयोजित किए हैं। मुझे यह जानकर बहुत खुशी हो रही है कि टास्क फोर्स ने निर्धारित समय सीमा में राष्ट्रीय शिक्षा नीति –2020 कार्यान्वयन योजना : रणनीतिक योजनाएं और लक्ष्य का खाका तैयार कर लिया और राष्ट्रीय शिक्षा नीति –2020 के कार्यान्वयन की स्थिति को एक पुस्तिका के रूप में सामने लाया। मैं प्रोफेसर बाजपेयी और उनकी पूरी टीम को महत्वपूर्ण मील का पत्थर हासिल करने के लिए बधाई देता हूं और रणनीतिक योजना के अनुसार सभी लघु, मध्य और दीर्घकालिक लक्ष्यों के प्रभावी और समय पर कार्यान्वयन के लिए शुभकामनाएं देता हूं। मुझे यकीन है कि प्रकाशित की जा रही "रणनीतिक योजनाएं और लक्ष्य" गुरु घासीदास विश्वविद्यालय को उत्कृष्टता के केंद्र के रूप में बदलने और राष्ट्रीय शिक्षा नीति –2020 में परिकल्पित सकारात्मक बदलाव लाने में एक अग्रणी भूमिका निभाएंगे।

(प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल)

संरक्षक का संदेश

कुलसचिव का संदेश

यह हर्ष का विषय है कि गुरू घासीदास विश्वविद्यालय द्वारा गठित टास्क कोर्स कुशलतापूर्वक कार्य करते हुए शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा समय–समय पर दिए गए दिशा–निर्देशों के अुनसार राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी–2020) के विभिन्न प्रावधानों को कार्यान्वित कर रही है। विशेष रूप से हमारे नए एवं करिश्माई कुलपति प्रोफेसर आलोक कुमार चक्रवाल के कार्यभार ग्रहण करने के बाद यह प्रक्रिया और तेज हो गई है। उनके दूरदर्शी नेतृत्व एवं प्रेरक दृष्टिकोण से विश्वविद्यालय परिसर में सकारात्मक परिवर्तन एवं उत्कृष्ट शैक्षणिक माहौल देखने को मिल रहा है।

वास्तव में यह सौभाग्य की बात है कि गुरू घासीदास विश्वविद्यालय ने अधिगम– परिणाम आधारित स्नातक पाठ्यक्रम का कार्यान्वयन किया है।यह विश्वविद्यालय सभी संस्थाओं के लिए एबीसी पंजीयन उपलब्ध कराने में अगुवा है एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020 के सभी महत्वपूर्ण प्रावधानों को कार्यान्वित करने में सबसे आगे है। इस संदर्भ में लघु–मध्य एवं दीर्घ अवधि के लक्ष्यों के साथ राष्ट्रीय शिक्षा नीति कार्यान्वयन रणनीति एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति के कार्यान्वयन की स्थिति को समाहित करने वाली किताब ''रणनीति योजना एवं लक्ष्य'' राष्ट्रीय शिक्षा नीति के महत्वपूर्ण तत्वों के आगामी कार्यान्वयन के लिए महत्वपूर्ण होगी। समिति को उनके इस प्रयास के लिए शुभकामनाएं।

(प्रो.शैलेन्द्र कुमार)

प्राक्कथन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत को एक वैश्विक ज्ञान महाशक्ति में बदलने में सक्षम एक सुविचारित, अभिनव रोड मैप के रूप में सामने आई है। सही मायने में, यह नीति देश भर में लगभग सभी हितधारकों से व्यापक चर्चा, संवाद और योगदान से विकसित हुई है। नीति में उच्च शिक्षा की गुणवत्ता के मामले में उच्चतम वैश्विक मानकों को प्राप्त करने की परिकल्पना की गई है और एक ही समय में शिक्षार्थियों में भारतीय मूल्यों, लोकाचार, देशभक्ति, मानवीय सशक्तिकरण और सामाजिक जुड़ाव के प्रति संवेदनशीलता अन्तर्निविष्ट करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप, सरकार की नीतियों और उच्च शिक्षा संस्थानों के दृष्टिकोणों के बीच समन्वित राष्ट्रीय प्रयासों और परस्पर संबंधों को तालमेल बिठाने की जरूरत है, ताकि इसे समयबद्ध ढांचे में लागू किया जा सके। इस कार्य का पूरा विचार शिक्षार्थियों की हमारी युवा पीढ़ी को वास्तव में वैश्विक नागरिक बनाना है, जो भारतीय मूल्यों में गहराई से निहित है, हमारी सांस्कृतिक विरासत से अवगत है और भारतीय होने पर गर्व करने के साथ भारत को इसकी महिमा के शिखर पर ले जाने के लिए आश्वस्त है।

इस उद्देश्य को साकार करने का प्रयास करते हुए, माननीय कुलपति महोदय ने उच्च शिक्षा में राष्ट्रीय शिक्षा नीति –2020 के विभिन्न तत्वों के प्रभावी और समय पर कार्यान्वयन के लिए कार्यान्वयन रणनीतियों को तैयार करने के लिए एक टास्क फोर्स का गठन किया है। टास्क फोर्स ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति –2020 के विभिन्न आयामों को लागू करने के लिए बुनियादी रोडमैप और रणनीति विकसित की है। विकसित रणनीति में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रासंगिक अधिगम परिणाम आधारित पाठ्यक्रम, विदेशों में भारतीय उच्च शिक्षा संस्थानों के ब्रांड निर्माण, विदेशी विश्वविद्यालयों के साथ अकादमिक और शोध सहयोग, दोहरी व्यवस्था के तहत क्रेडिट मान्यता, वैश्विक नागरिकता दृष्टिकोण और विदेशी पूर्व छात्रों के साथ जुड़ाव जैसी गतिविधियों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है।

बड़े गर्व और सौभाग्य के साथ, राष्ट्रीय शिक्षा नीति –2020 टास्क फोर्स द्वारा तैयार की गई राष्ट्रीय शिक्षा नीति –2020 कार्यान्वयन के लिए रणनीतिक योजना और लक्ष्य साझा कर रहा हूँ। मुझे विश्वास है कि यह दिशा–निर्देश हमारे उच्च शिक्षा संस्थानों को शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में सहयोग के नवीन क्षेत्रों का पता लगाने और नए भारत की आकांक्षाओं को पूरा करने में योगदान करने के लिए प्रोत्साहित करेंगे।

प्रो. पी.के. बाजपेयी,

संयोजक, एनईपी–2020 टास्क फोर्स

राष्ट्रीय शिक्षा नीति टास्क फोर्स समिति

श्री अतुल कोठारी	संरक्षक
प्रो. पी. के. बाजपेयी	संयोजक
सभी विद्यापीठों के अधिष्ठाता	सदस्य
निदेशक, आईक्यूएसी	सदस्य
अधिष्ठाता, छात्र कल्याण	सदस्य
विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी, विकास	सदस्य
मानदंड समन्वयक	I . प्रो. एस. एस. सिंह
	II. प्रो. अनुपमा सक्सेना
	III. प्रो. बी.एन. तिवारी
	IV. प्रो. ए.एस. रणदिवे
	V. प्रो.एस.सी. श्रीवास्तव
	VI. प्रो. मनीषा दुबे
	VII. प्रो. अमित सक्सेना
	VIII. प्रो. पी.के. बाजपेयी

राष्ट्रीय शिक्षा नीति कार्यान्वयन समयसीमा

केंद्रीय कैबिनेट द्वारा 29 जुलाई 2020 को स्वीकृत राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 शिक्षा के क्षेत्र में सबसे परिवर्तनकारी सुधारों में से एक रहा है और इसे "आत्मनिर्भर भारत" को दूरदर्शी वैश्विक नेता के रूप में स्थापित करने के लिए एक गेम चेंजर के रूप में माना जा रहा है। कोविड महामारी के दौरान, लगभग सभी शैक्षिक संगठनों द्वारा प्रत्येक नीति तत्व के सूक्ष्म विवरण और भारतीय युवाओं के विकास पर इसके प्रभाव को समझने के लिए, सामाजिक रूप से लगे हुए, उन्नत संज्ञानात्मक क्षमता वाले, और जो वैश्विक, राष्ट्रीय और स्थानीय समस्याओं का स्थायी व् अभिनव समाधान प्रदान करने में सक्षम हैं, के लिए निर्बाध राष्ट्रीय विमर्श रहा है। गुरु घासीदास विश्वविद्यालय ने भी प्रो. बी.एन. तिवारी के संयोजन में एनईपी के विभिन्न आयामों पर राष्ट्रीय शिक्षाविदों के साथ चर्चा करने और इसकी कार्यान्वयन रणनीति और चरणबद्ध कार्यान्वयन समयसीमा की योजना बनाने के लिए एक समिति गठित की है। समिति (जैसा कि प्रो. तिवारी द्वारा सूचित किया गया था) ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के कार्यान्वयन के लिए कुछ बैठकें आयोजित की, राष्ट्रीय शिक्षा नीति –

2020 के कार्यान्वयन पर दो कार्यक्रमों का आयोजन किया और इस महीने की 17 तारीख को एक अन्य कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें श्री अतुल कोठारी जी और अन्य प्रख्यात शिक्षाविद् कार्यान्वयन रणनीतियों पर चर्चा करेंगे। हालाँकि, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 के प्रावधानों के कार्यान्वयन के लिए एकीकृत, चरणबद्ध दिशा-निर्देश का अभाव रहा।

13.09.2021 को, विश्वविद्यालय ने शैक्षणिक सत्र 2021-22 से राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 को लागू करने के लिए एक नई समिति (टास्क फोर्स) का गठन किया

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 के सम्बन्ध में विश्वविद्यालय के लिए रणनीतिक योजना और लक्ष्यों का मसौदा तैयार करना, और

2. चरणबद्ध तरीके से राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 के कार्यान्वयन के लिए एक रोडमैप प्रदान करना।

यह देखते हुए कि उपरोक्त प्रारूपण एक कठिन कार्य है और समिति के पास बहुत सीमित समय है जैसा कि सत्र लगभग एक महीने के बाद शुरू होगा। इसके अलावा, एनईपी के कार्यान्वयन के लिए व्यापक रोडमैप में विश्वविद्यालय के उच्च शिक्षा/शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों के प्रख्यात विशेषज्ञों के साथ प्रणाली के भीतर चर्चाओं और विमर्श की एक विस्तृत श्रृंखला, वेबिनार/परामर्शी सत्रों की श्रृंखला शामिल है। हम कार्यान्वयन के लिए रोडमैप तैयार करने के लिए आंतरिक और बाहरी विशेषज्ञों के साथ ऐसे कई विचार-मंथन सत्र आयोजित करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं, इसके बजाय, हमारे कुछ आंतरिक सदस्यों का लाभ उठाएं जिन्होंने ऐसे कई सत्रों में व्यापक रूप से भाग लिया और कई व्याख्यान दिए। हम पिछले एक साल के दौरान विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा अधिसूचित ऐसे कई विनियमों का भी लाभ उठाएंगे, जिनमें ABC विनियम, मिश्रित मोड अधिगम के लिए विनियम, बहु-प्रवेश-निर्गम दिशानिर्देश, 36 स्नातक पाठ्यक्रमों के लिए अधिगम परिणाम-आधारित पाठ्यक्रम शामिल है। नैक की मान्यता के लिए भी एसएसआर जमा करने की प्रक्रिया अंतिम चरण में हैं। इस कार्य के दौरान भी, हम में से अधिकांश ने डेटा विश्लेषण का कठिन काम किया है और गुणवत्ता सुनश्चयन के बारे में विशेषताओं, कमजोरियों, चुनौतियों और अवसरों के साथ-साथ परिसर में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में सुधार के साथ-साथ परिसर को इको-सिस्टम में बदलने की प्रक्रिया से गुजरे हैं। अंत में, हमने अपने कामकाज, व्यवहार और दृष्टिकोण पर व्यस्त गतिविधियों और प्रेरक नेतृत्व के प्रभाव को देखा है। अनुसंधान के चिन्हित क्षेत्रों में उत्कृष्टता केंद्र की स्थापना, केंद्रीय अनुसंधान सुविधा की स्थापना, सहयोग के लिए नए एमोयू, नए संस्थान-अकादमिक संपर्क रणनीति आदि सहित गुणवत्ता सुधार के लिए विभिन्न प्रयास शुरू किए गए हैं, सभी को इस योजना में एकीकृत किया जाना चाहिए। इसलिए, नवगठित समिति की ओर से, हम समिति के क्षेत्र में परिकल्पित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित समयसीमा प्रस्तावित करते हैं

1. "राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 कार्यान्वयन योजना: रणनीतिक कार्य योजना एवं लक्ष्य" तैयार करने के लिए समिति उच्च शिक्षा के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति के निम्नलिखित चिन्हित तत्वों पर ध्यान केंद्रित करेगी, जिसमें व्यावसायिक शिक्षा के लिए ढांचा भी शामिल है:

• परिसर में उच्च शिक्षा में समता, पहुंच और समावेशन

• लचीली, समग्र और बहुविषयक शिक्षा प्रदान करना

• शिक्षक का उन्नयन और नवाचारी शिक्षक के रूप में उनकी भूमिका सुनिश्चित करना।

• मिश्रित मोड सीखने के लिए प्रौद्योगिकी सक्षम शिक्षण और क्षमता निर्माण

• भारतीय ज्ञान प्रणाली, भाषा, मूल्यों और संस्कृति को वर्तमान ज्ञान प्रणाली के साथ एकीकृत करना

• उच्च शिक्षा का अंतरराष्ट्रीयकरण : वैश्विक पहुंच बढ़ाना

• रैंकिंग के साथ शिक्षण, अनुसंधान और नवाचार को जोड़ना

• एकीकृत उच्च शिक्षा प्रणाली विकसित करना

रणनीतिक योजना में, प्रत्येक श्रेणी में कई उप श्रेणियाँ होंगी, जिनके लिए लक्ष्य निर्धारित किए जाएंगे। हम प्रत्येक बिंदु के लिए उप-समिति बनाकर 40 दिनों के भीतर इस कार्य को पूरा करने की योजना बना रहे हैं।

2. कार्यान्वयन के कुछ पहलुओं पर चर्चा और विचार-विमर्श एक साथ जारी रहेगा और रणनीतिक योजना का ढांचा तैयार करने के लिए महत्वपूर्ण प्रतिक्रिया को शामिल किया जाएगा। अस्थायी रूप से नियोजित इनमें से कुछ अभ्यास हैं:

• राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 कार्यान्वयन रणनीतियों पर राष्ट्रीय संगोष्ठी 17.09.2020

• राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 को लागू करने में भारतीय ज्ञान प्रणाली, सांस्कृतिक मूल्यों और गुरुकुल मॉडल की भूमिका पर राष्ट्रीय संगोष्ठी: 28.09.2021 (नीति आयोग, भारत सरकार, बीएसएम और गुरु घासीदास विश्वविद्यालय के सहयोग से)

• संस्थानों के समूह बनाने के लिए क्षेत्रीय कार्यशाला, अक्टूबर 2021 का पहला सप्ताह

• संबंधित बीओएस द्वारा यूजीसी द्वारा अधिसूचित एलओसीएफ में पुनरीक्षण और संशोधन: 15 अक्टूबर, 2021

• एमओओसी (मूक) के माध्यम से मेंटर-मेंटी कार्यक्रम में भाग लेने के लिए शिक्षकों की पहचान और उनकी क्षमता वृद्धि: दिसंबर 2021

• स्नातक शिक्षा को और अधिक बहुविषयक बनाने के लिए मूल्य वर्धित पाठ्यक्रमों की पहचान करना, पाठ्यक्रमों को जोड़ना और पाठ्यक्रम तैयार करना: अक्टूबर 2021

3. व्यावसायिक शिक्षा में बहु-विषयक पाठ्यक्रमों की पहचान: एआईसीटीई कार्यान्वयन कार्यक्रम के पालन करने के लिए एक उपसमिति प्रस्तावित है: समिति के संयोजक प्रो. संजय ढांडे से मार्गदर्शन प्राप्त करना। राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 के कार्यान्वयन के लिए सुपरिभाषित प्रक्रियाओं, प्रणालियों और **मापनीय सुपुर्दगी योग्य** की आवश्यकता होती है, ताकि आसानी से प्रगति का आकलन, प्रतिपुष्टि का विश्लेषण और लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए उचित पहल किया जा सके। हम सक्षम अधिकारियों से यह भी अनुरोध करते हैं कि यदि उचित समझे, तो इस तरह का अभ्यास भी करें।

यह विचारार्थ प्रस्तुत किया गया है एवं अनुमोदन होने पर अध्यक्ष की अनुमति से विद्या परिषद की स्थायी समिति के समक्ष रखा जा सकता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 कार्यान्वयन का सारांश

पूर्व में 16 जून, 1983 को अविभाजित मध्य प्रदेश राज्य विधानसभा के एक अधिनियम के माध्यम से स्थापित एक राज्य विश्वविद्यालय, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर में अरपा नदी के तट पर स्थित है और केंद्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 2009 के तहत केंद्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा दिया गया था। संसद द्वारा विश्वविद्यालय । 17 वीं शताब्दी के समाज सुधारक सतनामी संत गुरु घासीदासजी के नाम पर, यह एक आवासीय विश्वविद्यालय है जिसका अधिकार क्षेत्र छत्तीसगढ़ का बिलासपुर राजस्व संभाग है। नैक (NAAC) ने विश्वविद्यालय को B ग्रेड प्रदान किया है। विश्वविद्यालय के 32 विभागों में 36 स्नातक, 28 स्नातकोत्तर, 33 पीएचडी, 4 डिप्लोमा और 2 प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम संचालित है, जो कला, शिक्षा, अभियांत्रिकी और प्रौद्योगिकी; अंतरविषय अध्ययन, विधि, जीवन विज्ञान; प्रबंधन और वाणिज्य; गणितीय और संगणक विज्ञान; प्राकृतिक संसाधन; भौतिकीय विज्ञान और सामाजिक विज्ञान जैसे विषयों की एक श्रृंखला से संबंधित हैं ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 के कार्यान्वयन के लिए, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय ने एक टास्क फोर्स का गठन किया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020के संदर्भ में विश्वविद्यालय में निम्नलिखित सर्वोत्तम अभ्यास हैं:

• विश्वविद्यालय में संचालित 16 पाठ्यक्रम और 31 विषय बहु-विषयक प्रकृति के हैं।

• शैक्षणिक सत्र 2021-22 से सभी स्नातक पाठ्यक्रम एलओसीएफ आधारित हैं। सभी स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में पीओ, सीओ, पीएसओ होते हैं।

• औसतन, स्नातक कार्यक्रमों के 23% पाठ्यक्रमों और स्नातकोत्तर कार्यक्रमों के 34% पाठ्यक्रम में अनुभवात्मक शिक्षण घटक होते हैं। सभी कार्यक्रमों के पाठ्यक्रम में प्रायोगिक/परियोजना/इंटर्नशिप कार्यक्रम/निबंध/क्षेत्र कार्य प्रशिक्षण शामिल हैं।

• विश्वविद्यालय में शैक्षणिक सत्र 2022-23 से बहु प्रवेश-निर्गम के साथ 15 पाठ्यक्रम संचालित है।

• एनआईआरएफ रैंकिंग और नैक प्रत्यायन बाधाओं के कारण विश्वविद्यालय अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट के लिए पंजीकरण नहीं करा सका। इस संबंध में कुलपतियों की बैठक के दौरान विश्वविद्यालय ने एबीसी के साथ रैंकिंग को अलग करने का प्रावधान करने के लिए सुझाव दिए हैं।

• राष्ट्रीय शैक्षणिक निक्षेपागार (NAD) प्रणाली 2014-2015 से लागू की गई है। एनएसडीएल से 9696 छात्रों का डाटा ट्रांसफर कर डिजिलॉकर में अपलोड किया गया है। एनएडी (NAD) के तहत लगभग 9696 छात्र लाभान्वित हुए हैं।

• विश्वविद्यालय वर्तमान में "स्वयं" (SWAYAM) के तहत एम.टेक में एक पाठ्यक्रम संचालित कर रहा है। क्रेडिट ट्रांसफर के तहत कोई भी पाठ्यक्रम संख्या नहीं है, क्योंकि पाठ्यक्रम जारी है।

• विश्वविद्यालय योग में एक प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम संचालित कर रहा है। इसके अलावा, तीन कौशल विकास-आधारित कार्यक्रम 2022-23 से संचालित करने के लिए अनुमोदन हेतु प्रस्तुत किया गया है। नैनोटेक्नोलॉजी, नैनोसाइंस एवं एडवांस मैटेरियल्स में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम और परफॉर्मिंग आर्ट्स (बीपीए) और फाइन आर्ट्स (बीएफए) में स्नातक पाठ्यक्रम कौशल आधारित कार्यक्रम हैं।

• विश्वविद्यालय शैक्षणिक वर्ष 2022-23 से क्षेत्रीय भाषा में तीन पाठ्यक्रम प्रारंभ करेगा।

• वर्तमान में, विश्वविद्यालय ऑनलाइन मोड में कोई पाठ्यक्रम प्रदान नहीं कर रहा है। लेकिन विश्वविद्यालय स्वयं के तहत एम.टेक में एक पाठ्यक्रम की पेशकश कर रहा है।

• राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 को सुचारू रूप से और सफलतापूर्वक लागू करने के लिए विश्वविद्यालय ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर 10 कार्यक्रम आयोजित किए हैं।

• एनईपी 2020 टास्क फोर्स और 08 उपसमितियों ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए सूक्ष्म विवरण और विकसित रणनीतिक योजनाओं और लक्ष्यों पर काम किया है।

विशिष्ट रणनीतिक योजनाओं और लक्ष्यों की आवश्यकता

रणनीतिक योजनाएं और लक्ष्य संस्थान की सुधार के लिए पहल का हिस्सा है, ताकि छात्र परिणामों में सुधार के साथ-साथ एक अधिक कुशल और प्रभावी संगठन बनने के लिए खुद को प्रबंधित कर सके। रणनीतिक योजना प्रभावशीलता और दिशा बोध के लिए उद्देश्यों और मापनीय लक्ष्यों की रूपरेखा प्रदान करती है। इसके अलावा, यह प्रगति का मूल्यांकन करने और आगे बढ़ने पर दृष्टिकोण बदलने में मदद करता है। विश्वविद्यालय की दृष्टि और मिशन पर ध्यान केंद्रित करने के साथ रणनीतिक योजना विकसित की गई है, ताकि गहरी जड़ें स्थापित की जा सके जो विश्वविद्यालय के निरंतर उन्नयन के लिए एक स्थिर आधार के रूप में काम करेगी, साथ ही साथ प्रयोग और नवाचार के अभियान को मजबूत करेगी। यह हितधारकों को समान लक्ष्यों को व्यक्त करने और सहमत होने के साथ-साथ विकास के समान पथ पर ध्यान केंद्रित करने में सक्षम बनाता है। रणनीतिक योजना में फीड बैक सत्रों में समुदाय और अन्य हितधारकों को शामिल करना भी शामिल है, जो टीम को अधिक लक्षित रणनीतिक योजना स्थापित करने और सामुदायिक समर्थन प्राप्त करने में सहायता करता है।

अधिकांश विश्वविद्यालय तीन से पांच साल की योजना तैयार करते हैं, जिससे रणनीतियों, जिम्मेदार व्यक्ति, समय सीमा और आवश्यक राशि का पता चलता है। निष्पादन प्रक्रिया में पहले चरण के रूप में रणनीतिक योजना का मूल्यांकन किया जाता है। रणनीति की पूरी तरह से जांच की जानी चाहिए, और योजना के किसी भी घटक जो असाधारण रूप से कठिन हो सकता है, पर जोर दिया जाना चाहिए, उदाहरण के लिए, योजना का कोई भी हिस्सा जो अवास्तविक या लागत में अत्यधिक हो सकता है, या तो समय या धन राशि के मामले में। रणनीति को कार्यान्वित करने के लिए आवंटित टीम के नेताओं के साथ टीमों को तैनात करना महत्वपूर्ण है। प्रगति की निगरानी और टीम के संयुक्त प्रयासों और समय-सीमा पर कड़ी नज़र रखना टीम को सफलता की ओर ले जाएगा। इस तरह की रणनीतिक योजनाओं को लागू करने से न केवल विश्वविद्यालय के प्रयासों के लिए आंतरिक और बाहरी हितधारकों का समर्थन प्राप्त होता है, बल्कि सफलता पर नजर रखने और मापने के लिए सार्थक उपायों का विकास भी होता है।

चूंकि सभी उच्च शिक्षा संस्थान और अन्य सभी हितधारक राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 की भावना को समझने का प्रयास कर रहे हैं और नीति के भावानुरुप अपनी कार्यान्वयन योजनाओं को विकसित कर रहे हैं, हमने गुरु घासीदास विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 को चरणबद्ध तरीके से लागू करने के लिए महत्वपूर्ण रणनीतिक योजनाओं और लक्ष्यों की पहचान की है। । राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 के कार्यान्वयन के लिए रणनीतिक योजनाओं और लक्ष्यों के अनुमोदन के बाद, यह स्पष्ट हो गया कि चरणबद्ध कार्यान्वयन के लिए आठ प्रमुख क्षेत्रों के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए हमें रणनीतिक योजनाओं और लक्ष्यों में बताई गई प्रक्रियाओं पर काम करना जारी रखना होगा।

बहुआयामी और समग्र शिक्षा

1.	प्रो.एस.एस.सिंह	-	अध्यक्ष
2.	प्रो.ए.एस.रंगारी	-	सदस्य
3.	प्रो.टी.वी.अर्जुनन	-	सदस्य
4.	प्रो.मनीष श्रीवास्तव	-	सदस्य
5.	डॉ. बबिता मांझी	-	सदस्य
6.	डॉ.पंकज गुप्ता	-	सदस्य
7.	डॉ.बी.डी.मिश्र	-	सदस्य
8.	डॉ.सन्मति जैन	-	सदस्य

बहुआयामी और समग्र शिक्षा के प्रचार के लिए रणनीतियाँ और कार्य योजना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मौजूदा शिक्षा प्रणाली में संरचनात्मक और वैचारिक सुधार लाने पर जोर देती है। एनईपी 2020 के कार्यान्वयन में अग्रणी होने के नाते, जीजीवी, बिलासपुर बहु-विषयक और समग्र शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण अपनाता है।

हम मानते हैं कि एक समग्र और बहु-विषयक शिक्षा का उद्देश्य मानव की सभी क्षमताओं को एकीकृत तरीके से विकसित करना जरूरी है । इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए गुरु घासीदास विश्वविद्यालय चरणबद्ध तरीके से आगे बढ़ रहा है। एक से अधिक समग्र और बहु-विषयक शिक्षा प्रणाली के लिए, लघु, मध्यम, दीर्घकालिक लक्ष्य और कार्य योजनाएं विकसित की जा रही हैं।

लघु अवधि के लक्ष्य और रणनीतियाँ (<2 वर्ष)

बहु-विषयक और समग्र शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए, GGV के निम्नलिखित लघु अवधि के लक्ष्य और कार्य योजनाएँ हैं।

क्र.सं.	लघु अवधि के लक्ष्य/उद्देश्य	लक्ष्य/उद्देश्यों तक पहुंचने के लिए कार्यप्रणाली/कार्यान्वयन रणनीति
1.	बहु-विषयक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए लचीले पाठ्यक्रम में बदलाव के लिए एक रोडमैप तैयार करना और	जीजीवी में उपलब्ध सभी व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के लिए बहु-विषयक पाठ्यक्रमों को समायोजित करने के लिए अध्यादेश में प्रावधान करना। स्नातक स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में मुख्य और व्यावसायिक विषयों में मुक्त और ऐक्षिक के लिए योजना में प्रावधान करना गुरु घासीदास विशवविद्यालय में बहु विषयक शिक्षा प्रणाली का कार्यान्वयन करना और विद्यार्थियों को इसके दिशा निर्देशों की जानकारी प्रदान करना ।
2.	स्नातक स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में सी.बी.सी.एस.की बहुविषयक ऐच्छिक खुला चयन प्रकृति की शैक्षिक सुविधाओं का परिचय प्रदान करना । बहुविषयक सामान्य/खुला पाठ्यक्रम चयन प्रकृति का परिचय ।	
3.	क्रेडिट के हस्तांतरण और मूल्यांकन योजना से युक्त बहुविषयक पाठ्यक्रम का नीति निर्माण	विद्यार्थियों,संकाय सदस्यों तथा परीक्षा अनुभाग के लिए महत्वपूर्ण मापदंडों का निम्नलिखित दिशा-निर्देश तैयार करना-. प्रत्येक पाठ्यक्रम का अधिकतम तथा न्यूनतम क्षमता, परीक्षा की योजना अर्थात आतंरिक मूल्यांकन, मुख्य परीक्षा, आतंरिक मूल्यांकनों की संख्या, क्रेडिट की संख्या आदि की तैयारी करना।
4.	वर्तमान में विभागों में संचालित ऐसे पाठ्यक्रमों की खोज करना जिन्हें व्यावसायिक पाठ्यक्रम के भीतर बहुविषयक पठ्यक्रम के एक भाग के रूप में दूसरे विभागों,संकायों के लिए प्रस्तावित किया जा सके ।	बुनियादी ढाँचे और संसाधनों की उपलब्धता के आधार पर सभी व्यावसायिक पाठ्यक्रमों द्वारा सनातक/स्नातकोत्तर के विद्यार्थियों को दिए जा रहे खुले वैकल्पिक विषयों की सूची तैयार करना । विद्यार्थियों के सामान्य पोर्टल पर खुले वैकल्पिक विषयो को चयन और चुनने के विकल्प की सुविधा के साथ उपलब्ध कराना।
5.	विद्यार्थियों के लिए आवश्यक अव्यावसायिक पाठ्यक्रमों को शुरू करके बहुविषयक एवं समग्र शिक्षा को और अधिक मजबूत बनाना ।	कला, विज्ञान, प्राकृतिक विज्ञान, वाणिज्य, इतिहास, विधि विभाग, शारीरिक शिक्षा आदि विश्वविद्याय के विभागों से योग,ध्यान,भारतीय संस्कृति,विरासत और जीवनशैली आदि जैसे खुले विकल्प के रूप में नए पाठ्यक्रम शुरू करने की संभावनाएं तलाशना ।
6.	सभी विषयों और कार्यक्रमों में पाठ्यचर्या के साथ पाठ्येतर और सह पाठ्यक्रम गतिविधियोंको बढ़ावा देना ।	सभी विषयों और कार्यक्रमों में पाठ्यचर्या के साथ सह पाठ्यक्रम और पाठ्येतर गतिविधियों को एकीकृत करने के लिए एक नीति

	Promoting Co- curricular and extra-curricular activities with curricular in all disciplines and programmes	विकसित करना ।
7.	स्नातक/स्नातकोत्तर के विद्यार्थियों के लिए अन्त:विषयक परियोजना या अनुसंधानकार्य को बढ़ावा देने के लिए एक तंत्र विकसित करना ।	अन्य स्कूल विभाग के स्नातक विद्यार्थियों को प्रोजेक्ट टीम के सदस्य के रूप में प्रोजेक्ट में शामिल करने के लिए अध्यादेश तथा योजनाओं में प्रावधान करना ।दूसरे संकाय तथा विभागों को प्रोजेक्ट एन शामिल करने के लिए अध्यादेश तथा योजनाओं में प्रावधान करना ।
8.	समग्र एवं बहुविषयक शिक्षा में विद्यार्थियों की रूचि पैदा करने के लिए बहुविषयक क्लब की शुरुआत करना ।	विद्यार्थियों को राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय स्तर के विभिन्न तकनीकी कार्यक्रमों में सहभागिता के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करने के लिए, सोसाइटी ऑफ़ ऑटोमोटिव इन्जीनियर्स, इंस्टीट्यूट ऑफ़ इंजीनियर्स, इन्डियन सोसाइटी फॉर टेक्निकल एजुकेशन (आई.ईईई) रिन्यूएबल एनर्जी क्लब,आदि के समान बहुविषयक प्रकृति के विभिन्न तकनीकी क्लब/विद्यार्थी अध्याय निर्मित करना।
9.	उद्योग आधारित पाठ्यक्रमों को एक खुले ऐच्छिक पाठ्यक्रम के रूप में प्रस्तुत करना।	कार्यक्रम से सम्बंधित आस-पास के, प्रदेश स्तर के या राष्ट्रीय स्तर के उद्योगों की उपलब्धता को चिन्हित करना। सेमीनार, वेबिनार, प्रशिक्षण आदि के आयोजनों से उद्योगों के साथ उपयोगी संपर्क स्थापित करना । उद्योग विशेषज्ञों द्वारा पढाये जाने योग्य उद्योग आधारित पाठ्यक्रम विकसित करना ।

मध्यम अवधि (2-5वर्ष) लक्ष्य और चुनौतियाँ

क्रम.सं.	माध्यम अवधि के लक्ष्य/उद्देश्य	लक्ष्य/उद्देश्य की प्राप्ति के इए कार्य प्रणाली/कार्यान्वयन रणनीति
1.	प्रारंभिक चरण में विकसित नीतियों के आधार पर नये बहुविषयक कार्यक्रमों का कार्यान्वयन और परिचय	पूर्व क्षात्रों,उद्योग क्षेत्र के पेशेवर,तथा शेयरधारकों की प्रतिपुष्टि-प्रतिक्रियाओं के माध्यम से अद्यतन औद्योगिक विकास और औद्योगिक जरूरतों की पहचान करना । गुरु घासीदास विश्वविद्यालय में उद्योगों और अनुसंधान क्षेत्रों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए बायोमेडिकल इंजीनियरिंग,मेक्ट्रोनिक्स एनर्जीइन्जीनियारिंग,नैनो इंजीनियरिंग,माइनिंग इंजीनियरिंग आदि जैसे नए बहुविषयक पाठ्यक्रमों की पहचान करके,शुरुआत की जा सकती है।
2.	समकालीन प्रासंगिकता के कार्यक्रमों और भारतीय मूल्य प्रणाली को बढ़ावा देने के लिए नए विभागों की शुरूआत।	योग और ध्यान विभाग, इंडोलॉजी और समग्र स्वास्थ्य जैसे समकालीन प्रासंगिक कार्यक्रमों के लिए नए विभागों की स्थापना करना । यदि नए स्थापित विभागों के पास पर्याप्त संसाधन और बुनियादी ढांचा उपलब्ध हो तो ऐसी स्थिति में उनसे अतिरिक्त पाठ्यक्रमों की पेशकश की जा सकती है।
3.	ऐच्छिक-सामान्य ऐच्छिक के अंतर्गत बहु/विषयक और समग्र शिक्षा को बढ़ावा देने वाले मुक्त पाठ्यक्रमों की संख्या का विस्तार करना	
4.	बहुविषयक शिक्षा और अनुसंधान के लिए उत्कृष्टता केंद्र की स्थापना करना	राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रासंगिक, उद्योगों और अनुसंधान उद्योगों के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करना।

		फंडिंग एजेंसियों, उद्योगों और प्रमुख शोध संस्थानों के सहयोग से सेंटर ऑफ एक्सीलेंस की स्थापना करना ।

लम्बी अवधि केन्द्रित (5 – 10 वर्ष)

यह विश्वविद्यालय सहज,सरल और स्पंदित शैक्षणिक माहौल प्रदान करने लिए एक सक्षम वातावरण प्रस्तावित करता है जो बहु-विषयक शिक्षा और अनुसंधान सुनिश्चित करता है।

क्रम.सं.	**लम्बी अवधि के लक्ष्यउद्देश्य/**	लक्ष्यउद्देश्यों तक पहुंचने के लिए / कार्यान्वयन रणनीति/कार्यप्रणाली
1.	आने वाले समय में विश्वविद्यालय भारतीय दर्शन, मूल्य परक शिक्षण प्रणालियों में सीखने और अनुसंधान के लिए एक अग्रणी और सक्रिय केंद्र बनने की परिकल्पना करता है, जो छात्रों, शोधकर्ताओं और अन्य लाभार्थियों के समग्र विकास को सुनिश्चित करता है।	अल्प अवधि और लम्बी अवधि के लक्ष्योंउद्देश्यों के / सफल कार्यान्वयन से दीर्घकालिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद मिलेगी।
2.	गुरु घासीदास विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न बहुविषयक – संस्थानों केकेन्द्र के रूप में तैयार करना	

List of Identified courses for Open Elective from the Professional courses

क्रम.सं.	विभाग	मुक्त-चयनात्मक विषय
1	सी.एस.ई	1. डेटा संरचना और एल्गोरिदम 2. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस
2	आई.पी.ई.	1. प्रबंधन के सिद्धांत 2. ऑपरेशन रिसर्च
3	रसायन शास्त्र विभाग	1. अपशिष्ट निर्मित ऊर्जा 2. केमिकल इंजीनियरिंग के मूलभूत सिद्धांत
4	अभियांत्रिकी विभाग	1. सिविल इंजीनियरिंग अभ्यास 2. अजर-स्थापत्य निर्माण सामग्री और प्रबंधन 3. हरित-विकास सामग्री और प्रौद्योगिकी
5	ई.सी.ई.	1. बुनियादी इलेक्ट्रॉनिक्स एवं संचार प्रणाली 2. इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आईओटी) 3. चित्र एवं चलचित्र प्रसंस्करण के मूल सिद्धांत
6	तकनीकी शिक्षा विभाग	1. अक्षय ऊर्जा स्रोत 2. उत्पाद डिजाइन और विकास 3. रोबोटिक्स का परिचय
7	सूचना प्रौद्योगिकी विभाग	1. साइबर सुरक्षा 2. सूचना प्रौद्योगिकी का परिचय
8	फार्मेसी विभाग	

9	**कम्पूटर साइंस एवं सूचना तकनीकी विभाग (सी.एस.आई.टी)**	1. सीप्रोग्रामिंग ++सी/ 2 . सीजावा का उपयोग कर डेटा संरचना/पायथन/++सी/ 3 . आरडीबीएमएस 4 . सूचना प्रौद्योगिकी का परिचय 5 . लिनक्स ऑपरेटिंग सिस्टम 6. सॉफ्ट कंप्यूटिंग
10	**प्रबंध शास्त्र विभाग**	भारतीय वित्तीय प्रणाली तनाव प्रबंधन डिजिटल मार्केटिंग

उच्च शिक्षा में समानता, पहुंच और समावेशन प्रचार के लिए रणनीतियाँ और कार्य योजना-

संबंधित समिति ने अपने कामकाज में समानता, पहुंच और समावेश के लिए विश्वविद्यालय द्वारा उठाए जा सकने वाले कदमों को तय करने का कार्य किया। समिति की औपचारिक रूप से दो बार बठैक हुई और कई अन्य अवसरों पर अनौपचारिक रूप से। समिति ने अपने दिशा-निर्देश नई शिक्षा नीति दस्तावेज और एआईयू दस्तावेज से लिए हैं। संबंधित मामलों पर विस्तार से विचार-विमर्श किया गया और वैचारिकता के क्षेत्रों को चिन्हित कर उन्हें स्वीकार किया गया। विश्वविद्यालय की संबंधित इकाइयों / कर्मियों को इस दिशा में उचित कदम उठाने की सीमाएं तय की गई जो निम्नानुसार है:

1. विविधता, समानता, पहुंच और समावेश सनुिनिश्चित करने के लिए सस्ंथागत तंत्र की स्थापना

समिति अनुशंसा करती है कि विविधता, समानता, पहुंच और परि सर में समावेश सनुिनिश्चित करने के लिए निरंतर विश्लेषण, निगरानी और उचित सुझाव देने के लिए एक विविधता प्रकोष्ठ की स्थापना की जानी चाहिए। यह एनईपी की कार्यान्वयन रणनीतियों के अनुसार है जहां यह लिखा गया है: "यह अनुशंसा की जाती है कि एससी / एसटी सेल जसैे वैधानिक सस्ंथागत तंत्र को छोड़कर, अन्य सभी सस्ंथागत व्यवस्थाओं को सटेंर फॉर ऑप्टिमाइजिंग डायवर्सिटी एंड इक्विटी (CODE) नामक एक छत्र सगंठन के तहत लाया जा सकता है।) विश्वविद्यालयों के लिए पीवीसी के स्तर पर वरिष्ठ संकाय सदस्यों या कॉलेजों के लिए उप-प्राचार्य को CODE के निदेशक / प्रभारी के रूप में नियुक्त किया जा सकता है जिसमें संकाय सदस्य, कर्मचार्मरी और छात्र प्रतिनिधि शामिल होने चाहिए" (एनईपी 2020 कार्यान्वयन रणनीतियाँ, पृष्ठ 77-78)। यह प्रस्तावित है कि प्रकोष्ठ का अध्यक्ष सामाजिक-आर्थिक रूप से वचित वर्ग सेहोना चाहिए और 50% से अधिक सदस्य एसईडीजी सेभी होने चाहिए। इसके पीछे तर्क यह हैकि SEDG की आबादी लगभग 70% है लेकिन उनका प्रतिनिधित्व काफी कम है।

2. विकलांगों और महिलाओं के लिए समावेशी बनिुनियादी स्वरूप

उपयुक्त उपायों में सड़क पर दिशात्मक सकंेत स्थापित करना और ब्रेल में संकेत शामिल होंगे। एक अन्य आवश्यकता माताओं के लिए शिशुगृह की सुविधा, शौचालय सहित बाधा मुक्त भवन और विश्वविद्यालय के प्रवेश द्वार पर कॉमन यटूिटिलिटी सटेंर की है।

3. समावेशी शक्षैणिक जोर को बढ़ावा देना

इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक आवश्यकता अंग्रेजी और हिंदी माध्यम के छात्रों के लिए ब्रिज कोर्स की होगी और विश्वविद्यालय प्रशासन उसके लिए आवश्यक कदम उठा सकता है। अकादमिक जगत के कुछ अन्य मामलों में ब्रेल भाषा में मूल्य वर्धित पाठ्यक्रम, लगैंगिक समानता और संवैधानिक अधिकार, मानवाधिकार आदि पर पाठ्यक्रम शामिल हैं। यूजीसी के मानदंडों के अनुसार प्रत्येक विभाग में संकाय सदस्यों की उपलब्धता सनुिनिश्चित करके विश्वविद्यालय की सलाह प्रणाली को मजबूत करना, मौजूदा पाठ्यक्रमों की रोजगार क्षमता में वृद्धि करना और यह सनुिनिश्चित करना कि कक्षाओं को सहभागी बनाकर रोजगार योग्यता विशेषताओं को समान रूप से वितरित किया जाता है और संबंधित विभागों और विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा उपयुक्त रणनीति तैयार की जानी चाहिए। एक और लक्ष्य, कौशल वृद्धि पाठ्यक्रम विकसित करना और ऐसे पाठ्यक्रमों के लिए एसईडीजी

की समान पहुंच सनिुनिश्चित करना, कौशल विकास प्रकोष्ठ की देखरेख में रखा जाना चाहिए। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में प्रौद्योगिकी के प्रयोग को बढ़ावा देना चाहिए। आजीवन सीखने को बढ़ावा देने के लिए लचीले बहु प्रविष्टि और बहु मौजूद विकल्प। विश्वविद्यालय के पुस्तकालय को सुलभ बनाना और दिव्यांग छात्रों के लिए सॉफ्टवेयर की उपलब्धता सनिुनिश्चित करना।

4. समावेशी शिक्षाशास्त्र का अभ्यास

इसे प्राप्त करने के लिए विभिन्न सामाजिक समहों के छात्रों सहित समूह अध्ययन को शिक्षण पद्धति के रूप में शामिल करने की आवश्यकता होगी। डीन और विभागाध्यक्षों को सत्र के दौरान आवश्यक प्रावधान करने और इसे व्यवहार में लाने की आवश्यकता होगी। इसके अलावा, एक शिक्षाशास्त्र अध्ययन केंद्र भी स्थापित किया जा सकता है।

5. समावेशी परिसर

एक सामदुायि क भावना विकसित करने के लिए एक सुझाव छात्रावासों में कमरे का आवटंन इस तरह से किया जाएगा जिस से सामाजिक समावेश सनिुनिश्चित हो सके और मुख्य वार्डन इसे सनिुनिश्चित कर सकें। खेल और अन्य पाठ्येतर गतिविधियों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए जो समावेशिता को बढ़ावा देते हैं। एक और सुझाया गया कदम यह होगा कि छात्रों को सहज महससू कराने और विश्वविद्यालय के माहौल के अनुकूल होने के लिए 'दीक्षारंभ' जैसा 3-दिवसीय कार्यक्रर्यम आयोजित किया जाए। यह और इस तरह के अन्य आयोजन स्कूलों और कॉलेजों को विश्वविद्यालय से जोड़ने के लिए एक इंटरफेस बनाने में मदद करेंगे।

6. सभी को एक सरुक्षित परिसर प्रदान करना

विश्वविद्यालय के छात्रों और कर्मचारियों की सरुक्षा सर्वोपरि है। समिति द्वारा सुझाए गए उपायों में विशेष रूप से महिलाओं द्वारा आवतृ क्षेत्रों में पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था प्रदान करना शामिल है (इस पर काम करने के लिए इंजीनियरिंग अनुभाग); 24/7 गश्ती दल की सहायता के लिए और, यदि आवश्यक हो, महिलाओंको एस्कॉर्ट करने के लिए (विश्वविद्यालय सरुक्षा अनुभाग इस पर काम करने के लिए); शिकायत निवारण प्रकोष्ठ को मजबूत करना और इसके कामकाज के बारे में एसईडीजी सहित सभी से वार्षिक प्रतिक्रिया; और उन परि सर स्थानों की पहचान करनेके लिए सरुक्षा ऑडिट किया जा सकता है जो महिला छात्रों के लिए असरुक्षित हैं (इस पर काम करने के लिए नोडल अधिकारी, लिंग चैपियन योजना)। छात्रों के लिए परिसर में आने-जाने के लिए बसों की सख्ंया में वृद्धि , विशेष रूप से रेलवे स्टेशन के लिंक के साथ। आपातकालीन नबंरों के साथ एक एकीकृत विश्वविद्यालय सरुक्षा प्रणाली का भी सुझाव दिया गया है। रैगिगं विरोधी, उत्पीड़न विरोधी उपायों का सख्ती से क्रियान्वयन।

7. बाधा मुक्त परिसर

इसेप्राप्त करनेके लिए, यह अनुशंसा की जाती है कि परिसर के भीतर आने-जाने के लिए विकलांगों और अन्य लोगों के लिए बटैरी से चलने वाले रिक्शा। DSW द्वारा आवश्यक कदम उठाए जानेकी उम्मीद है।

8. लक्ष्य- समावेशिता को बढ़ावा देनेके लिए गति विधियां

समावेशी परिसर मेंवि भागों को सह-पाठयक्रम और पाठ्येतर गतिविधियों सहित सभी विभागीय गति विधियों में नेतृत्व की भूमिका, प्रतिनिधित्व और भागीदारी सनुिनिश्चित करनी चाहिए। परिसर में विभिन्न अनौपचारिक समूहों / मंचों का निर्माण करना।

9. जरुततमंदों को वित्तीय और अन्य सहायता

इस लक्ष्य को प्राप्त करनेके लिए कई कदमों की आवश्यकता है जिसमें गरीब छात्रों के लिए छात्रवृति की संख्या बढ़ाना, मुफ्त भोजन कूपन, मुफ्त डेटा कार्ड, और मुफ्त परिवहन कूपन और जरूरतमदं छात्रों को मुफ्त किताबें और स्टेशनरी, और स्थानीय बैंकों और अन्य फंडिंग एजेंसियों के साथ सहयोग करना शामिल है। जरूरतमदं छात्रों को मौके पर/वित्त पोषण प्रदान करें। डीएसडब्ल्यू और वित्त अनुभाग से इन पर काम करने की उम्मीद है। परिसर के बाहर आसान और सरुक्षित आवासीय सुविधाओं की सुविधा के लिए स्थानीय छात्रावासों और पीजी मालिकों के साथ सहयोग करने के लिए डीएसडब्ल्यूऔर मुख्य वार्डन को शामिल करते हुए एक समिति की स्थापना और पुस्तकायल प्रबधंन, डिजाइनिंग, टाइपिंग, ग्राफिक्स आदि में "सीखते समय कमाएँ" योजना का कार्यान्वियन। छात्रों के लिए अन्य उपाय हैं जिन्हें डीएसडब्ल्यू की सहायता से अपनाया जा सकता है और वित्त अनुभाग भी सुझाए गए हैं।

10. छात्रों, सेवानि वत्तृ कर्मचारियों और विश्वविद्यालय के विभिन्न प्रकोष्ठों द्वारा परामर्श

विश्वविद्यालय छात्रों और सेवानि वत्तृ कर्मचारियों की मदद से अपनी जनशक्ति का पर्याप्त उपयोग कर सकता है। वे एसईडीजी के पीयर ग्रपु बनाने में मदद कर सकते हैं, ट्रेलब्लेज़र की पहचान कर सकते हैं और उन्हें एसईडीजी के लिए परामर्श और सहकर्मी समूह में शामिल कर सकते हैं, और वरिष्ठ छात्रों को छात्रों के लिए शिक्षण सहायक / सलाहकार के रूप में कार्य करने के लिए शामिल कर सकते हैं। डीन, विभागाध्यक्ष और विश्वविद्यालय प्रशासन को इसे लागू करना चाहिए। इसके अलावा, एक अन्य आवश्यकता उपचारात्मक कोचिगं प्रणाली को सुधारना और मजबूत करना है ताकि इसे और अधिक परिणामोन्मखुी बनाया जा सके और उपचारात्मक कोचिगं सेल प्रभारी उपयुक्त रणनीति तैयार कर सकें। छात्रों के मनोवैज्ञानिक और शारीरिक परामर्श के लिए बने विभिन्न प्रकोष्ठों को मजबूत किया जाना चाहिए।

11. विभिन्न शक्षैणि क पाठ्यक्रमों में एसईडीजी की संख्या बढ़ाना

छात्रों का विविधतापर्णू डेटा बेस विकसित करना और शिक्षाविदों में उनका प्रदर्शन एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय है। यह डेटा बेस छात्रों की गोपनीयता बनाए रखते हुए सस्थान में समावेशी नीतियों को लगातार तैयार करने में मदद करेगा। परीक्षा और अकादमिक अनुभाग योजना बना सकते हैं और इसे लागू कर सकते हैं। यह भी सुझाव दिया जाता है कि शक्षैणिक अनुभाग उन पाठ्यक्रमों के लिए सीटों की संख्या बढ़ाने के लिए काम करता है जहां अनसुचिूचित जाति, अनसुचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग और पीएच उम्मीदवारों की संख्या से अधिक है। उन्हें आवंटित सीटें (विभाग को पर्याप्त सविुविधाएं प्रदान करने के बाद) और उन पाठ्यक्रमों में महिला आवेदकों के लिए अतिरिक्त सीटें बनाने के लिए जहां वे पुरुष समकक्षों के साथ प्रति स्पर्धा करने में सक्षम नहीं हैं। साथ ही,

महिला अध्ययन केंद्र उन पाठ्यक्रमों में महिलाओं के लिए अधिक भागीदारी युक्त कार्यक्रर्यमों का ध्यान रखेगा जहां पाठ्यक्रम की मांग अधिक है लेकिन महिला आवेद कों की संख्या कम है।

12. विश्वविद्यालय समदुाय का संवेदीकरण

एक महत्वपूर्ण कदम माता-पिता, संकाय सदस्यों, अधिकारियों, कर्मचारियों और छात्रों के लिए लगातार लिंग संवेदीकरण कार्यशालाओं का आयोजन करना होगा, जिसका ध्यान जेंडर सेंसिटाइजेशन सेल और नोडल अधिकारी, जेंडर चैंपियंस योजना द्वारा किया जाएगा। एक अन्य उपाय में विभाग के संकाय, कर्मचारियों और छात्रों के लिए विशेष संवेदीकरण सत्र शामिल होंगे जहां कोई भी पीएच छात्र नामांकित है। इसमें शिक्षा विभाग द्वारा भाग लिया जा सकता है। इसके अलावा, एक आवश्यकता संकाय सदस्यों के लिए विविधता और समानता के मुद्दे पर विशेष सत्र आयोजित करना होगा और सभंवत: यह सामाजिक कार्य विभाग द्वारा किया जा सकता है। यह भी सिफारिश की जाती है कि परिसर के सभी छात्रों के लिए कम से कम एक आउटरीच कार्यक्रर्यम अनि वार्य किया जाना चाहिए ताकि छात्रों के साथ-साथ विज़िट किए गए समदुायों, समहूों को विविधता, समानता और विभिन्न समहूों की विशेष जरूरतों के बारे में जागरूक किया जा सके। डीन और एचओडी से यह काम कराने की उम्मीद है।

13. लक्ष्य: समावेशी नीति और निर्णय लेना

यह महससू कि या गया कि चुनाव आयोग, एसी, भवन समिति, अनुशासन और रैगिंग विरोधी समिति, सांस्कृतिक समिति आदि जेसै सभी वैधानिक निर्णय लेने वाले निकायों में एसईडीजी का प्रतिनिधित्व और नेतृत्व की भूमिका नुिनिश्चित की जानी चाहिए। विश्वविद्यालय प्रशासन इसे करवा सकता है।

अल्पकालिक (<2 वर्ष) लक्ष्य

सस्ंथागत विकास योजनाओं की तैयारी जिसमें एसईडीजी की भागीदारी और पहुंच बढ़ाने पर कार्रवाई के लिए विशिष्ट योजनाएं शामिल हैं। 2022-23 तक विविधता प्रकोष्ठ की स्थापना।

पर्याप्त बुनियादी ढांचे वाले मौजूदा विभागों मेंसेवन क्षमता में वृद्धि ।

यूजी और पेशेवर कार्यक्रर्यमों मेंरोजगार क्षमता बढ़ाने के लिए कौशल आधारित पाठ्यक्रमों की शुरुवात।

छात्रों के अनुकूल सस्ंथागत वेबसाइट। दिव्यांग आगंतुकों को साइट पर आसानीसे नेविगेट करने में मदद करने के लिए उपयुक्त ऑडियो/वीडियो घटकों को शामिल किया जा सकता है।

खेलकूद/मनोरंजन सविुविधाओं में वृद्धि

सीखने के माहौल और समावेशी शिक्षाशास्त्र को जोड़ने के लिए छात्रों के चर्चा मचं

छात्रों के कल्याण के लिए तंत्र जेसै शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य, मनो-सामाजिक कल्याण और ध्वनि नैतिक सौंदर्य।

समान अवसर प्रकोष्ठ के माध्यम से और सहकर्मी समहूों और सेवानिवत्तृ कर्मचारियों द्वारा परामर्श के माध्यम से एसईडीजी को शैक्षणिक और व्यावसायिक सहायता।

SEDGs को सामाजिक-भावनात्मक और शैक्षणिक सहायता के लिए कार्यक्रर्यमों का मार्गदर्शन करना।

SEDGs को वित्तीय सहायता के लिए अपने आतंरिक संसाधनों का 15% तक निर्धारित करना।

विकलांग और लिंग संवेदनशील पारिस्थितिकी तंत्र।

यह सनुिनिश्चित करना कि सभी भवन और सविुविधाएं (मौजूदा और आगामी) बाधा रहित, व्हीलचेयर-सुलभ और विकलांग-अनुकूल हैं।

सभी भेदभाव रहित और उत्पीड़न विरोधी नियमों को सख्ती से लागू करना।

क्षेत्र के रोजगारोन्मुखि युवाओं को विश्वविद्यालय में शामिल करनेके लिए आकर्षित करने के लिए स्थानीय प्रतिभाओं के सहयोग से समदुाय आधारित परियोजनाएं/स्टार्ट-अप।

भारतीय भाषाओं और/या द्विभाषी रूप में पढ़ाए जाने वाले अधिक कार्यक्रर्यम पाठ्यक्रम विकसित करना।

सभी स्तरों पर आजीवन सीखने के अवसरों को सुविधाजनक बनाने के लिए लचीले निकास/प्रवेश विकल्प।

वंचित शैक्षिक पृष्ठभूमि से आने वाले छात्रों के लिए ब्रिज कोर्स विकसित करना।

विकलांग व्यक्तियों की विशिष्ट आवश्यकताओं और हितों को पूरा करने वाली पुस्तकों और सॉफ्टवेयर की पर्याप्त आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए विश्वविद्यालय पुस्तकालय का सदृ्ढ़ीकरण और आधनुिनिकीकरण।

मंत्रालयों/सगंठनों/ संस्थाओं जेसै सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, एनसीईआरटी, एनसीटीई, आरसीआई, कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय आदि के साथ नियमित अंतराल पर अलग-अलग विकलांग व्यक्तियों को उचित समर्थन के लिए साझेदारी।

निर्णय लेने की प्रक्रिया में एसईडीजी का प्रतिनिधित्व।

मध्यावधि (3-5 वर्ष)र्ष लक्ष्य

शैक्षणिक , व्यावसायिक और व्यावसायिक कार्यक्रर्यमों की सीमा का विस्तार करना।

समावेशी और गणुवत्तापर्णू उच्च शिक्षा की दिशा में पहल के लिए तकनीकी सहायता।

विविध छात्र समहूों का समर्थनर्थ करनेके लिए विभिन्न अनौपचारि क मंचों का निर्माण।

दुरुस्थ और विविध पृष्ठभूमि के छात्रों को आकर्षित करने के लिए ऑन-कैंपस लॉजिस्टिक और अकादमिक सहायता।

उच्च शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए अवसर लागत और शुल्क को कम करना।

SEDGs को अधिक वित्तीय सहायता और छात्रवत्तृित्ति प्रदान करना।

प्रवेश प्रक्रियाओं और पाठ्यक्रम को अधिक समावेशी बनाना।

सस्थागत विकास योजनाओं की समीक्षा जिसमें एसईडीजी की भागीदारी बढ़ानेपर कार्रवाई के लिए विशिष्ट योजनाएं शामिल हैं।

लिंग-पहचान के मुद्दों पर संकाय, परामर्शदाता और छात्रों का संवेदीकरण और पाठ्यक्रम सहित एचईआई के सभी पहलुओं में लिंग संवेदनशीलता पर ध्यान केंद्रित करना।

निःशक्तता अध्ययन और जेंडर अध्ययन पर विशेष पाठ्यक्रम और कार्यक्रर्यम शुरू करना।

सभी विषयों के पाठ्यक्रम में व्यावसायिक कौशल और अनभुवात्मक शिक्षा का एक्सपोजर।

सभी के लिए एक सरुक्षित परिसर सनुिनिश्चित करना

दीर्घकालिक (5-10 वर्ष) लक्ष्य

अतंरराष्ट्रीय छात्रों को आकर्षित करने के लिए गणुवत्तापूर्ण आवासीय सविुविधा।

सभी के लिए एक समावेशी परिसर सनुिनिश्चित करना।

अतंर्राष्ट्रीय श्रम संगठन द्वारा बनाए गए व्यवसायों के अतंर्राष्ट्रीय मानक वर्गीकरण के साथ व्यावसायिक कौशल के भारतीय मानकों को संरेखित करना।

छात्रों को सभी प्रकार के शैक्षणिक , पेशवेर और करि यर परामर्श / कोचिंग प्रदान करने के लिए समान अवसर केंद्र।

उच्च शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक वंचित छात्रों के लिए प्रायोजन (ओं) की व्यवस्था करना।

नेतृत्व की भूमिकाओं में महिलाओं, विकलांगों और एसईडीजी का उचित प्रतिनिधित्व।

NEP-2020 में परिकल्पित उच्च शिक्षा में समानता और समावेशन से संबंधित शेष लक्ष्यों का कार्यान्वयन।

III. समग्र परिवर्तनीय और बहुविषयक शिक्षा प्रदान करना:

1. प्रो. बी.एन. तिवारी - अध्यक्ष

2. प्रो. वी.एस. राठौर - सदस्य

3. डॉ अभिषेक जैन - सदस्य

4. डॉ. रोहित सेठ - सदस्य

5. डॉ. रत्नेश सिंह - सदस्य

6. डॉ. सुधीर पाण्डेय - सदस्य

समग्र परिवर्तनीय और बहुविषयक शिक्षा प्रदान करने के लिए

प्रचार -प्रसार की रणनीतियाँ और कार्य योजना

शैक्षणिक कार्यक्रमों का चरणबद्ध तरीके से पुनर्गठन करना ।

अ) 4 वर्षीय स्नातक कार्यक्रम / 5 वर्षीय एकीकृत स्नातक / स्नातकोत्तर कार्यक्रम संचालित करना।

ब) पाठ्यक्रम में LOCF को शामिल करना।

स) बीओएस, अकादमिक परिषद और अन्य वैधानिक निकायों से विभिन्न स्तरों पर अनुमोदन लेना ।

एकाधिक प्रवेश/निकास

अ) पहले चरण में B. Pham और B. Tech कार्यक्रमों के लिए एकाधिक प्रवेश / निकास विकल्प प्रस्तुत करना;

ब) बाद में, अन्य स्नातक कार्यक्रमों व्यावसायिक और सामान्य शिक्षा कार्यक्रमों में भी कई प्रवेश / निकास विकल्प प्रदान किए जा सकते हैं।

क्रेडिट आधारित प्रणाली - एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट्स (ABC):

हमारे विश्वविद्यालय में यूजीसी (एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट्स (एबीसी) की स्थापना और संचालन योजना को अपनाने के लिए लागू निर्देश / अधिसूचना के अनुसार चरणबद्ध तरीके से अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट पर यूजीसी विनियमों को लागू करना।

विखंडन समाप्त करना

अ) बहुविषयक दृष्टिकोण अपनाना।

ब) व्यावसायिक शिक्षा को सामान्य शिक्षा के साथ जोड़ना।

स) विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और प्रबंधन (एसटीईएम) के साथ कला, सामाजिक विज्ञान और वाणिज्य का एकीकरण।

द) कौशल के साथ मूल्यों को एकीकृत करना।

ई) व्यावसायिक और जीवन कौशल को एकीकृत करना। मिश्रित तरीकों में आधुनिक और नवीन शैक्षणिक दृष्टिकोणों के साथ पारंपरिक शिक्षाशास्त्र को एकीकृत करना।

फ) छत्तीसगढ़ के पारंपरिक ज्ञान (जहां लागू हो) को आधुनिक ज्ञान के साथ एकीकृत करना।

बहुआयामी शिक्षा और अनुसंधान

अ) पहले चरण में बहु-विषयक प्रकृति के वैकल्पिक पाठ्यक्रमों की निर्धारित संख्या शुरू करना और फिर चरणबद्ध तरीके से पाठ्यक्रमों में वृद्धि करना। यें पाठ्यक्रम मूल्य शिक्षा, योग, स्वास्थ्य और फिटनेस, व्यक्तिगत वित्त प्रबंधन, पर्यावरण विज्ञान, छत्तीसगढ़ की कला और संस्कृति, नृत्य, संगीत, नाटक आदि पर होंगे।

ब) उद्योगों / कंपनियों / शिल्प कौशल आदि में इंटर्नशिप करने के अवसर प्रदान करना।

स) विश्वविद्यालय और उद्योगों के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करने के लिए बहु-विषयक अनुसंधान केंद्र की स्थापना।

द) विश्वविद्यालय (इंट्रा और इंटर स्कूल) में बहु-विषयक अनुसंधान शुरू करना।

निर्धारित करना लक्ष्य/ लक्ष्य

I- लघु अवधि (एक वर्ष के भीतर)

• बहु-विषयक और समग्र शिक्षा (समय के साथ) पर ध्यान केंद्रित करते हुए, चरणबद्ध तरीके से पाठ्यक्रम सुधारों के लिए विश्वविद्यालय के रोडमैप को अंतिम रूप देना।

• NEP-2020 के विजन के अनुरूप पाठ्यक्रम सुधारों के लिए विश्वविद्यालय स्तर पर चर्चा करना

• परिवर्तनीय विकल्पों की सुविधा के लिए पाठ्यक्रमों में संशोधन शुरू करना

• वैश्विक नागरिकता शिक्षा के अनुरूप संशोधित पाठ्यक्रम

• समृद्ध भारतीय परंपराओं की आवश्यक समझ प्रदान करने के लिए भगवद्गीता, कौटिल्य के अर्थशास्त्र, चरक-संहिता, पतंजलि योग सूत्र और अन्य मौलिक ग्रंथों जैसे शास्त्रीय ग्रंथों से प्रासंगिक भारतीय पारंपरिक ज्ञान और मूल्यों को शामिल करना।

• NEP के प्रमुख पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए परिणाम आधारित पाठ्यक्रम की शुरुआत करना।

• प्रत्येक विभाग / विद्यापीठ स्तर पर कम से कम एक बहु-विषयक प्रकृति का ओपेन/ सामान्य ऐच्छिक पाठ्यक्रमों का निर्माण / शुरूआत करना

• विश्वविद्यालय और उद्योगों के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करने के लिए बहु-विषयक अनुसंधान केंद्र की स्थापना।

• छात्रों को उनके मूल विषयों के अलावा अन्य विषयों के पाठ्यक्रमों में पीएच.डी.के लिए पंजीकरण करने की अनुमति देकर क्रॉस-डिसिप्लिनरी और इंटरडिसिप्लिनरी रिसर्च की संस्कृति को बढ़ावा देना।

• रोगों का मुकाबला करने, पर्यावरण संरक्षण, जल संचयन, अपशिष्ट प्रबंधन, भारतीय परिवार प्रणाली, स्वास्थ्य और कल्याण, त्योहार और अन्य प्रासंगिक क्षेत्रों में अनुसंधान को बढ़ावा देना।

• वि.वि. में संस्कृत, संगीत, दर्शनशास्त्र, योग, ललित कला अनुवाद और व्याख्या, तथा तुलनात्मक साहित्य जैसे विषयों के विभागों की शुरुआत करना ।

• नैक में A ग्रेड प्राप्त करने की दिशा में सक्रिय होना।

मध्यावधि (3–4 वर्ष)

• सामान्य और व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में एकीकृत स्नातक और स्नातकोत्तर कार्यक्रम (4 वर्षीय बी.ए.बी.एड./बीएससी बी.एड./बी.पी.एड.) को प्रारम्भ करना ।

• अतिरिक्त क्रेडिट के साथ समुदाय – आधारित पाठ्यक्रमों की श्रेणी का विस्तार करना ।

• NEP के नए उन्मुखीकरण और केंद्र को ध्यान में रखते हुए विभागों और विद्यापीठ का पुनर्गठन

• क्रेडिट ट्रांसफर के लिए देश में उच्च शिक्षा के विश्वविद्यालयों और संस्थानों की पहचान करना

• बहुविषयक शिक्षा और अनुसंधान केंद्र की स्थापना

• आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डिजाइन थिंकिंग, समग्र स्वास्थ्य, जैविक जीवन, पर्यावरण शिक्षा, वैश्विक नागरिकता, वैदिक अध्ययन आदि जैसे समकालीन प्रासंगिक कार्यक्रमों के लिए नए विभागों की शुरुआत करना।

लंबी अवधि (5–10 वर्ष)

• सभी विषयों में एकीकृत यूजी, पीजी और अनुसंधान कार्यक्रम।

• बहुविषयक कार्यक्रम चलाने के लिए अतिरिक्त विभागों की शुरुआत ।

• स्थानीय कलाकारों, उद्यमियों आदि के सहयोग से विशेष समुदाय आधारित व्यावसायिक पाठ्यक्रमों।

• सहयोगी शैक्षणिक और अनुसंधान कार्यक्रमों के लिए राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों के साथ अनुबंध.

• एनईपी-2020 में परिकल्पित शेष लक्ष्यों का क्रियान्वयन करना.

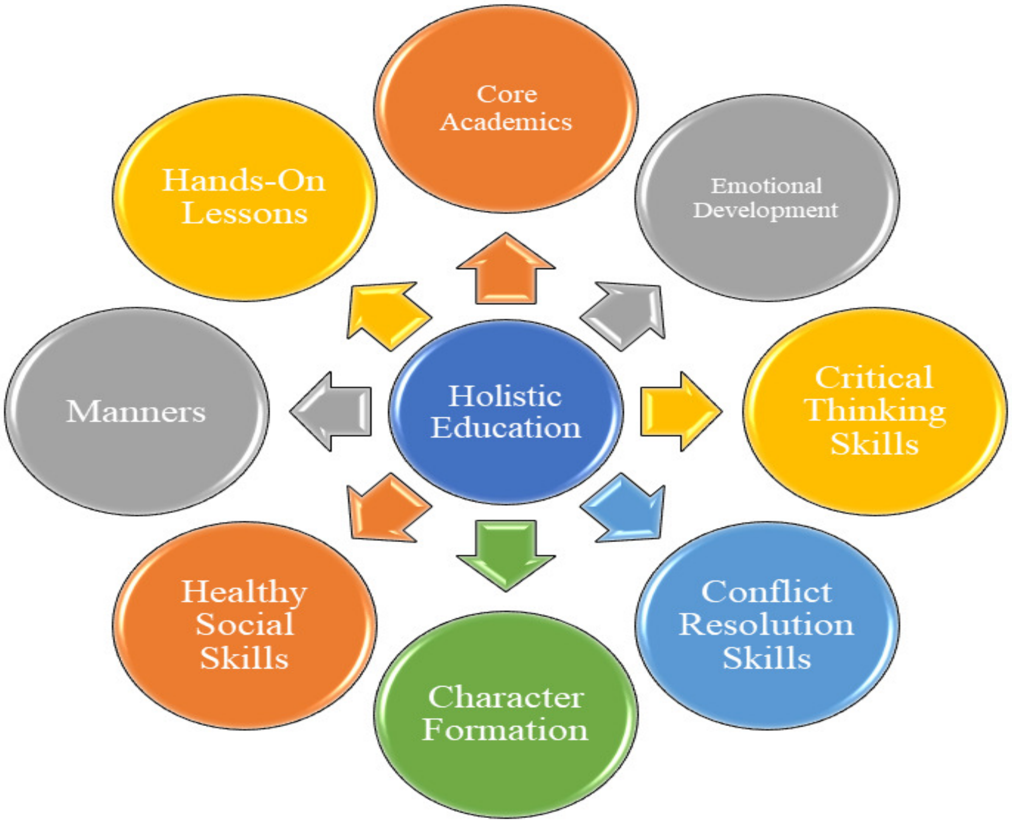

1. प्रो. एएस रणदिवे अध्यक्ष
2. डॉ. सीएस वझलवार सदस्य
3. डॉ. संजीत सरदार सदस्य
4. डॉ अरुण कुमार सिंह सदस्य
5. डॉ. सीमा राय सदस्य
6. डॉ विवेकानंद मंडल सदस्य

शिक्षक का रूपांतरण और नवाचारी शिक्षक के रूप में उनकी भूमिका की समीक्षा के लिए

पदोन्नति के लिए रणनीतियाँ एवं कार्य योजना

आयाम	विषय	कार्य योजना
	अल्पकालिक रणनीतियाँ	
सशक्तिकरण	पाठ्यक्रम प्रारूप	इन विषयों पर कार्यशालाओं का आयोजन – पाठ्यचर्या प्रारूप विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रम डिजाइन बहुआयामी पाठ्यक्रम – संज्ञानात्मक, भावात्मक, न्यूरोमोटर , मेटाकॉग्निटिव पहलुओं को एकीकृत करना परिणाम आधारित डिजाइनिंग अन्य पाठ्यचर्या आयामों की खोज (रोजगार, सामाजिक, व्यवहार, मूल्य, अंतरविषयात्मक आदि)
	शिक्षण प्राविधि	इन विषयों पर कार्यशालाओं का आयोजन – शिक्षाशास्त्र और प्रौढ़ शिक्षा पद्धति की संकल्पना विभिन्न शिक्षार्थी केंद्रित अभिनव दृष्टिकोण (जैसे परामर्श, टीम शिक्षण, परियोजना पद्धति, फ़्लिप कक्षा, आदि) प्रौद्योगिकी, शिक्षाशास्त्र और सामग्री ज्ञान (TPACK) एकीकरण
	मूल्यांकन	इन विषयों पर कार्यशालाओं का आयोजन – मूल्यांकन की विभिन्न विधियाँ एवं रीति गुणवत्ता मूल्यांकन उपकरण विकसित करना शैक्षिक एवं गैर–शैक्षिक विधियों को जोड़ना प्रौद्योगिकी–एकीकृत मूल्यांकन रचनात्मक एवं व्यापक मूल्यांकन के लिए शिक्षकों को सशक्त बनाने उपयुक्त रणनीति तैयार करना व अपनाना
नवाचार	विश्वविद्यालय स्तर पर नीति	शिक्षकों को आईसीटी–युक्त शिक्षण–अधिगम अध्यापन के साथ मजबूत और सशक्त बनाने तथा नवीन व नवाचारी पाठ्यक्रमों और पाठ्यचर्या के विकास के लिए निरंतर व्यावसायिक विकास कार्यक्रम विश्व स्तर पर प्रशंसित सभी प्रमुख वैज्ञानिक डेटाबेस की उपलब्धता के साथ पूर्ण पुस्तकालय स्वचालन।

		प्रत्येक परियोजना के लिए उपलब्ध बजट/अनुदान का उपयोग करने के लिए शिक्षकों/परियोजना निदेशक/परियोजना अन्वेषक को स्वायत्तता । अनुसंधान परियोजनाओं और कागज मुक्त कार्य (सॉफ्टवेयर ऑटोमेशन प्रणाली का उपयोग करके) के लिए फास्ट ट्रैक वित्तीय अनुमोदन।
प्रेरणा (बाह्य व आंतरिक)	शिक्षकों के सामर्थ्य को स्वीकार करके	प्रत्येक शिक्षक को उनके सामर्थ्य और विभाग/विश्वविद्यालय में अद्वितीय योगदान के लिए वार्षिक प्रशंसा उपयुक्त पुरस्कारों, सम्मानों, अकादमिक प्रशासन के संचलन के माध्यम से प्रत्येक स्तर के शिक्षक को प्रोत्साहित करना। अनुकूल संगठनात्मक माहौल/पर्यावरण को बनाए रखने के लिए प्रशासन, अधिकारियों और शिक्षकों को संगठनात्मक व्यवहार, और आंतरिक प्रेरणा को बढ़ावा देने की प्रणाली पर प्रशिक्षण देना सुधार के लाभ व संभावनाओं का पता लगाने के लिए छात्रों, उनके मित्रों और प्राधिकरण से फीडबैक का एकीकृत दृष्टिकोण लेना
	शिक्षण-अधिगम के लिए	सभी शिक्षकों को आईटी-टूलकिट (कंप्यूटर, वेब-कैम, प्रिंटर सहित) और कॉन्फ्रेंसिंग सुविधा के रूप में बुनियादी ढांचागत सहायता।
	अनुसंधान के लिए	अनुसंधान परियोजनाओं और परामर्श को बढ़ावा देने के लिए पृथक अनुसंधान कक्ष / नोडल कार्यालय अनुसंधान के लिए आसान प्रशासनिक सहायता प्रदान करने के लिए नीति तैयार करना शिक्षकों को आंतरिक अनुसंधान आकस्मिक अनुदान आवंटित किया जा सकता है अनुसंधान परामर्श सेवाओं के लिए उन्मुखीकरण कार्यक्रम आयोजित करना, और शोध प्रकाशनों की गुणवत्ता और दृश्यता में सुधार करना
	व्यक्तिगत	शिक्षकों की भर्ती/नियुक्ति और उनकी सेवा शर्तों के लिए सुपरिभाषित नीति। कैरियर उन्नयन योजना (सीएएस) के तहत समय पर

		पदोन्नति अतिरिक्त जिम्मेदारियों और मूल्यांकन को महत्त्व देना और प्रोत्साहित करना नागरिक चार्टर का समय पर कार्यान्वयन
	मध्यावधि रणनीतियाँ	
सशक्तिकरण	शिक्षण प्रविधि	नियमित आवश्यकता आधारित सतत व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों के लिए नीति प्रत्येक विभाग के लिए प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षण-अधिगम वातावरण सुनिश्चित करना बहुभाषी शिक्षण दक्षता पर कार्यशालाओं का आयोजन करना
	मूल्यांकन	नीति बनाने के लिए- विभिन्न मूल्यांकन विधियों और अभ्यास को पाठ्यक्रम में एकीकृत करने के लिए
नवाचार	विश्वविद्यालय स्तर पर नीति	विज्ञान प्रयोगशालाओं के लिए, विशेष रूप से रसायन-आधारित प्रयोगशालाएं जो संक्षारक रसायनों और अम्ल के साथ काम करने के कारण क्षतिग्रस्त होने की अधिक संभावना है, उचित नवीनीकरण और वार्षिक रखरखाव बजट परिचालन रूप से परिभाषित नवाचार संकेतक पाठ्यचर्या, शिक्षाशास्त्र, मूल्यांकन, अनुसंधान, व्यावसायिक सेवाओं के संबंध में शिक्षकों के बीच जागरूकता प्रदान करना कार्यभार, पाठ्यक्रम, मूल्यांकन नीतियों और व्यावसायिक मानकों को परिभाषित करने में नवीन दृष्टिकोणों को कैसे एकीकृत किया जाए, इस पर नीति तैयार करना शिक्षकों को नवीन दृष्टिकोण अपनाने, व्यक्तिगत लक्ष्य निर्धारित करने, और अनुमोदित ढांचे के भीतर अपने स्वयं के पाठ्यक्रम (समानांतर या स्वतंत्र) को डिजाइन करने और अपने स्वयं के शैक्षणिक दृष्टिकोण तय करने के लिए सम्भावना और स्वतंत्रता प्रदान करने की नीति। उपयुक्त संस्थागत तंत्र तैयार करके प्रत्येक शिक्षक को प्रायोजित अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक और अनुसंधान एक्सपोजर प्रदान करने की नीति।

		प्रोत्साहन, प्रचार और मान्यता के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण प्रकाशन और अनुसंधान के लिए शिक्षक को प्रेरित करने की नीति । इच्छुक और चिन्हित शिक्षक को व्यावसायिक विकास, शैक्षिक प्रबंधन और नेतृत्व कौशल के लिए अवसर दिया जा सकता है। आदर्श छात्र–शिक्षक अनुपात, छात्रों के साथ संवाद के लिए पर्याप्त समय, शोध और अन्य सेवाओं के लिए पर्याप्त समय प्रदान करना। छात्र–शिक्षक अनुपात बनाए रखने और बहु–विषयक शिक्षा की आवश्यकता को पूरा करने के लिए विविध पृष्ठभूमि से अधिक शिक्षकों की नियुक्ति अध्यापन के साथ अनुसंधान को एकीकृत करने के लिए शिक्षकों को बढ़ावा देना
प्रेरणा (बाहरी और आंतरिक)	शिक्षण–अधिगम के लिए	शिक्षकों को नवोन्मेषी दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रोत्साहन, स्वतंत्रता और लचीलापन प्रदान करने के लिए विश्वविद्यालय/विभाग स्तर की नीति तैयार करना पाठ्यक्रम डिजाइनिंग, शिक्षाशास्त्र और मूल्यांकन के लिए शिक्षकों को स्वायत्तता गुणवत्तापूर्ण शिक्षण–अधिगम और अनुसंधान के लिए शिक्षकों के सर्वोत्तम उपयोग के लिए– प्रत्येक विभाग को उनकी छात्र संख्या के अनुपात में अच्छी तरह से प्रशिक्षित गैर–शैक्षणिक कर्मचारी (सहायक और तकनीकी कर्मचारी) प्रदान करना शिक्षकों पर गैर– शैक्षणिक भार कम करने के लिए नीति का सख्ती से क्रियान्वयन गैर–शैक्षणिक कर्मचारियों को उनकी उपयुक्त कार्य भूमिका के लिए सशक्त बनाना कार्यालय कौशल पर गैर–शैक्षणिक कर्मचारियों को समय–समय पर प्रशिक्षण देना
	अनुसंधान के लिए	उच्च प्रभाव अनुसंधान योगदान के साथ जोड़ने वाली फास्ट ट्रैक प्रचार प्रणाली प्रतिबद्ध जनशक्ति और नवीनतम उपकरणों के साथ संचालित होने वाली केंद्रीय इंस्ट्रुमेंटेशन सुविधा।

		व्यक्तिगत शिक्षकों या समूह के लिए प्रारंभिक धन राशि उपलब्ध कराना अध्ययन के विभिन्न विषयों के लिए अनुसंधान आवश्यकताओं और गुणवत्ता संकेतकों की पहचान करना जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से अंतर–विषयक अनुसंधान को सुदृढ़ बनाना एक लचीला अनुसंधान पारिस्थितिकी तंत्र बनाने के लिए नीति विकसित करना विभिन्न विषयों में वित्त पोषण के लिए महत्वपूर्ण अनुसंधान क्षेत्रों को प्राथमिकता देना
	व्यक्तिगत	स्वस्थ, लचीला और मुक्त वातावरण व्यक्तित्व वृद्धि के लिए प्रेरक कार्यक्रम (जैसे योग, ध्यान कार्यक्रम, आध्यात्मिक वार्ता आदि) आयोजित करना शिक्षकों के लिए मनोरंजक गतिविधियों का आयोजन शिक्षकों के बच्चों और बुजुर्ग पारिवारिक सदस्यों के लिए सहायता प्रणाली विकसित करना
	शिक्षकों के सामर्थ्य को स्वीकार करके	प्रत्येक शिक्षक की अद्वितीय क्षमता और सामर्थ्य की पहचान करना शिक्षकों को योग्यता के आधार पर प्रोत्साहन प्रदान करने के लिए नीति तैयार करना शिक्षक की व्यक्तिगत अद्वितीय क्षमता और सामर्थ्य का आकलन करने में मदद के लिए अभिलेख तैयार करने के लिए व्यापक डिजिटल रिपोजिटरी (सीडीआर) का प्रारूपण एवं संचालन ।

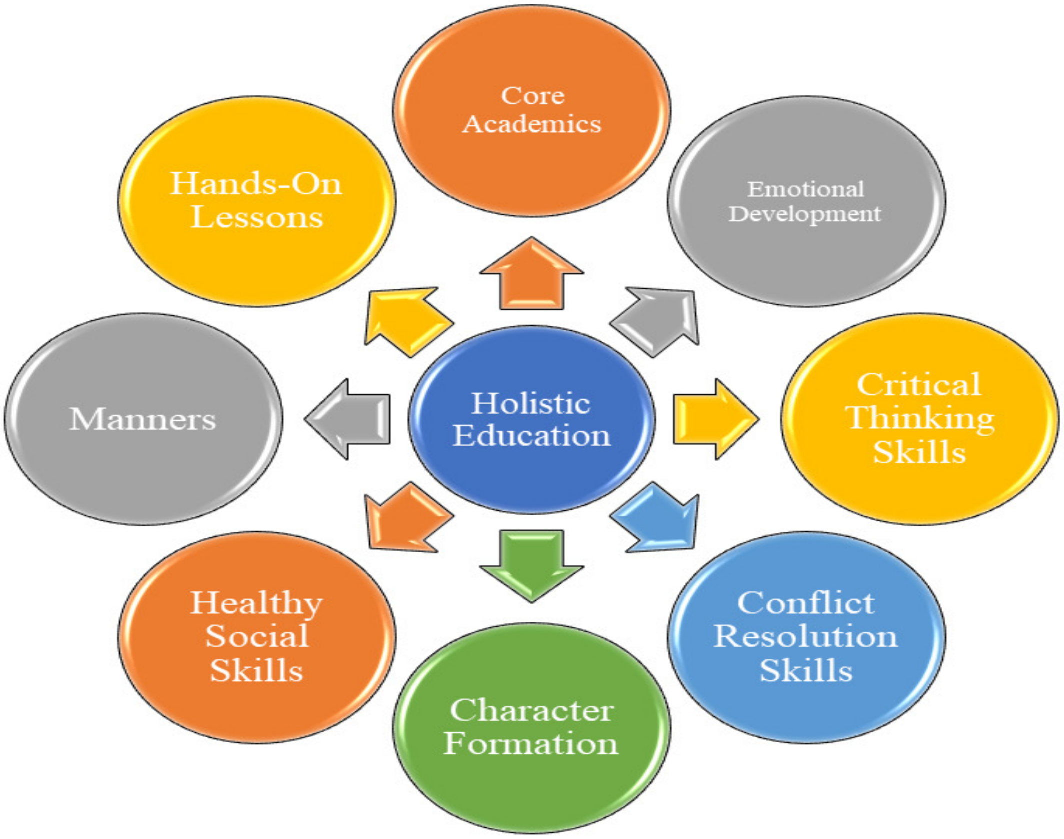

1. प्रो. एस.सी. श्रीवास्तव अध्यक्ष
2. डॉ. चारु अरोरा सदस्य
3. डॉ. आलोक कुशवाह सदस्य
4. डॉ. रोहित राज सदस्य
5. डॉ. पुष्पलता पुजारी सदस्य

mdç मता निर्माण हेतु अधिगम की मिश्रित प्रणाली में प्रमोशन हेतु रणनीतियाँ और

पारंपरिक क्लासरूम के ढाँचे से लेकर वर्तमान में प्रचलित ऑनलाइन और मिश्रित ढाँचे की कक्षा के कारण शिक्षण और अधिगम की प्रणालियों में व्यापक परिवर्तन हुआ है. इन्हीं परिवर्तनों ने सूचना और संचार प्रौद्योगिकियों के क्षेत्र में विकास संभव किया है. शिक्षानीति के विकास में आईसीटी, मुक्त शैक्षिक संसाधन नीति और कार्यान्वयन सहित; टीईएल और मिश्रित शिक्षण पद्धातियों पर बड़े पैमाने पर खुले ऑनलाइन पाठ्यक्रम; शैक्षिक संस्थानों में व्यवस्थित TETEL कार्यान्वयन और उन्नत आईसीटी कौशल विकास प्रौद्योगिकी-सक्षम शिक्षा: नीति, शिक्षाशास्त्र

और अभ्यास, जो पिछले पांच वर्षों में ज्यादातर टीईएल परियोजनाओं पर आधारित है, एक महत्वपूर्ण शोध परिप्रेक्ष्य के हिसाब से टीईएल बहुत सारे अनुभव प्रदान करता है और पाठ ऑफर करता है, जिसे कहीं भी संचालित किया जा सकता है.

मिश्रित अधिगम, ज्ञान विस्फोट की समस्या को हल करने में मदद करने के लिए सीखने के सबसे आधुनिक तरीकों में से एक है, शिक्षा की बढ़ती मांग और दूरस्थ शिक्षा में यदि उपयोग किया जाये, तो अत्यधिक भीड़भाड़ वाले व्याख्यानों की समस्या से निजात मिलेगी, शिक्षा में स्वीकृति के अवसरों का विस्तार करना, प्रशिक्षित करने, शिक्षित करने और पुनर्वास करने में सक्षम होगा.

अल्पकालिक लक्ष्य

- दीक्षा/स्वयं जैसे शैक्षणिक प्लेटफ़ॉर्मों का सर्वोत्कृष्टतम प्रयोग करना.
- शैक्षिक प्रक्रियाओं और परिणामों में सुधार के लिए पर्याप्त तकनीकी सहायता प्रदान करना.
- प्रौद्योगिकी समर्थित शिक्षण और क्षमता निर्माण हेतु शिक्षण-अधिगम और मूल्यांकन प्रक्रियाओं में सुधार करना.
-
- शिक्षक की तैयारी के लिए पर्याप्त हार्डवेयर और सॉफ्टवेर उपलब्ध कराना ताकि व्यावसायिक विकास, शैक्षिक पहुंच बढ़ाने और शैक्षिक योजना, प्रबंधन और प्रशासन प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित किया जा सके.
- स्नातक और व्यावसायिक कार्यक्रमों में पारंपरिक शिक्षण के साथ ऑनलाइन शिक्षण पद्धति का सम्मिश्रण.
- फेस-टू-फेस सीखने के आवश्यक महत्व पर विचार करते हुए विभिन्न विषयों के लिए मिश्रित शिक्षण के विभिन्न प्रभावी मॉडलों की पहचान करना.
- महामारी जैसी परिस्थितियों संवाद हेतु एक लोकप्रिय माध्यम के रूप में आनलाइन कक्षाएं आयोजित करने के लिए द्वि-आयामी वीडियो और द्वि-आयामी आडियो इंटरफेस जैसे टूल का उपयोग किया जा सकता है.
- ऑनलाइन प्रशिक्षण हेतु अधुनातन प्लेटफॉर्म स्वयं/दीक्षा का पूरा लाभ उठाने के लिए शिक्षकों को प्रमोट करना और केस प्रमोशन के लिए ऐसे प्रशिक्षणों/कार्यशालाओं पर विचार करना.
- मिश्रित शिक्षा प्रणाली के साथ 40% तक ऑनलाइन मोड की सहायता से शिक्षा प्रणाली में बदलाव करना.
- प्रत्येक विभाग में ध्वनि तकनीकी सहायता के अतिरिक्त नवीनतम आईसीटी सुविधाओं के साथ एक स्मार्ट क्लासरूम प्रदान करना.

दीर्घकालिक

- अभिनव या अभूतपूर्व प्रौद्योगिकियों पर अनुसंधान करना.

- अभिनव या अभूतपूर्व प्रौद्योगिकियों पर प्राथमिकता से ध्यान देना जिनसे हमारे जीने का तरीका बदलने की उम्मीद है और इसलिए हम छात्रों को शिक्षित करने के तरीके को बदलते हैं, जिसमें स्वच्छ और नवीकरणीय ऊर्जा, जल संरक्षण, टिकाऊ खेती, पर्यावरण संरक्षण, और अन्य हरित पहल शामिल हैं।
- एआई-आधारित प्रौद्योगिकियों के विकास और परिनियोजन के चहुँमुखी नैतिक मुद्दों पर उन्मुखीकरण.
- विश्वविद्यालय द्वारा पीएच.डी. और मुख्य क्षेत्रों जैसे मशीनी अध्ययन के साथ-साथ बहु-विषयक क्षेत्रों और स्वास्थ्य सुविधायें, कृषि और कानून जैसे पेशेवर क्षेत्रों में स्वयं मंच के माध्यम से परास्नातक कार्यक्रम भी ऑफर करना.
- भाषिक विविधता के मुद्दे से संबंधित कई भारतीय भाषाओं में डिजिटल सामग्री एकत्र करना.
- डिजिटल डिवाइड की समस्या से संबंधित एक संस्थागत समर्थन तंत्र तैयार करना.
- शिक्षण को बेहतर बनाने के लिए पारंपरिक और आईसीटी-संचालित अभिनव शिक्षणशास्त्र के बीच सही संतुलन बनाए रखना.
- एनईपी-2020 में परिकल्पित प्रौद्योगिकी उपयोग और एकीकरण से संबंधित शेष लक्ष्यों का कार्यान्वयन.

शिक्षण के मिश्रित तरीके के लिए प्रौद्योगिकी समर्थित शिक्षण और क्षमता निर्माण को कैसे लागू करें

स्रोत : एनईपी-2020 हैण्ड बुक पृष्ठ संख्या **36**

पहला चरण :- संस्थानों के पास ओपन डिस्टेंस लर्निंग (ओडीएल) और ऑनलाइन कार्यक्रम चलाने का विकल्प होगा, बशर्ते वे ऐसा करने के लिए मान्यता प्राप्त हों, ताकि वे अपनी पेशकशों को बढ़ा सकें, पहुंच में सुधार कर सकें, जीईआर बढ़ा सकें और आजीवन सीखने के अवसर प्रदान कर सकें (एसडीजी 4)। किसी भी डिप्लोमा या डिग्री के लिए अग्रणी सभी ओडीएल कार्यक्रम और उनके घटक एचईआई द्वारा उनके परिसरों में चलाए जा रहे उच्चतम गुणवत्ता कार्यक्रमों के समकक्ष मानकों और गुणवत्ता के होंगे। ओडीएल के लिए मान्यता प्राप्त शीर्ष संस्थानों को उच्च गुणवत्ता वाले ऑनलाइन पाठ्यक्रम विकसित करने के लिए प्रोत्साहित और समर्थन किया जाएगा। ऐसे गुणवत्तापूर्ण ऑनलाइन पाठ्यक्रमों को उच्च शिक्षा संस्थानों के पाठ्यक्रम में उपयुक्त रूप से एकीकृत किया जाएगा और मिश्रित मोड को प्राथमिकता दी जाएगी।

दूसरा चरण :- मैसिव ओपन ऑनलाइन कोर्स (मूक्स) प्लेटफॉर्म जैसे एस-वे एम एनपीटीईएल आदि पर उपलब्ध पाठ्यक्रमों का चयन करना अथवा उसे डेवलोप करना.

तीसरा चरण :- मिश्रित मोड के पाठ्यक्रमों के विकास के लिए प्रशिक्षण/वेबिनार/सेमिनार का आयोजन किया जाएगा.

चौथा चरण :- मिश्रित शिक्षण कार्यक्रम की प्रभावशीलता का मापन.

मिश्रित शिक्षण वह शब्द है जो डिजिटल शिक्षण उपकरणों को अधिक पारंपरिक कक्षा के साथ आमने-सामने शिक्षण के संयोजन के शैक्षिक अभ्यास को दिया जाता है. एक सच्चे मिश्रित सीखने के माहौल में छात्र और शिक्षक दोनों को शारीरिक रूप से एक ही स्थान पर स्थित होना चाहिए.

मिश्रित शिक्षण (हाइब्रिड लर्निंग के रूप में भी जाना जाता है) शिक्षण का एक तरीका है जो पारंपरिक प्रशिक्षक के नेतृत्व वाली कक्षा की गतिविधियों के साथ प्रौद्योगिकी और डिजिटल मीडिया को एकीकृत करता है, जिससे छात्रों को अपने सीखने के अनुभवों को अनुकूलित करने के लिए अधिक लचीलापन मिलता है.

मिश्रित शिक्षण कार्यक्रम : इसकी प्रभावशीलता का मापन कैसे करें

आपको कैसे पता चलेगा कि आपके संगठन में मिश्रित शिक्षा काम कर रही है? लोग और उनके कौशल व्यवसाय के रणनीतिक कार्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं। लेकिन मानव संसाधन में आपके निवेश की लागत भी हमेशा एक चिंता का विषय होती है। हमें विचार करना चाहिए कि उस निवेश की प्रभावशीलता को कैसे मापें। मिश्रित शिक्षा के प्रभाव को मापना आम तौर पर सीखने के प्रभाव को मापने से अलग नहीं है, केवल कुछ और तत्वों को मापने के अलावा। और हम जानते हैं कि किसी संगठन पर सीखने के वास्तविक प्रभाव को मापना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। आप मूल्यांकन के 4 स्तरों में से किर्कपैट्रिक के मॉडल [1] से परिचित हो सकते हैं:

स्तर 1 : प्रतिक्रिया

प्रशिक्षण मूल्यांकन आमतौर पर निम्नतम स्तर पर सबसे आसान होता है - सीखने की घटना के बाद सरल सर्वेक्षणों के माध्यम से छात्र प्रतिक्रियाओं का मापन करना. यद्यपि ये सर्वेक्षण मात्र एक झरोखा प्रदान करते हैं कि आपके शिक्षार्थी सीखने की घटना पर कैसे प्रतिक्रिया दे रहे हैं, क्या वे आपको समर्थन देने के लिए पर्याप्त होंगे जब प्रशिक्षण में अधिक निवेश की आवश्यकता होती है, जब बजट कम होता है, या जब संबद्ध बाजार में मंदी होती है? शायद नहीं।

स्तर 2: शिक्षण

स्तर 2 पर सकारात्मक परिवर्तन को मापने और आकलन करने के लिए, हम पूर्व में और बाद में प्रश्नोत्तरी रख सकते हैं कि क्या किसी विशिष्ट विषय पर ज्ञान में वृद्धि हुई है. अच्छी तरह से डिज़ाइन की गई शिक्षा में आमतौर पर शिक्षार्थियों के लिए कार्यक्रम में निर्मित बढ़ी हुई योग्यता को प्रदर्शित करने के तरीके शामिल होते हैं. अभ्यास अभ्यास और ज्ञान जांच के माध्यम से, हम सीखने के परिवर्तन के कुछ सामान्य उपायों को ट्रैक कर सकते हैं, उदाहरण के लिए, "ऑनलाइन पाठ्यक्रम लेने वाले 217 प्रतिभागियों में से 200 पहली बार पाठ्यक्रम के अंत में ज्ञान जांच पास करने में सक्षम थे।"

ये मेट्रिक्स शिक्षण के मामले में मददगार हैं, लेकिन संगठन के लिए सीखने के मूल्य के लिए बहस करने के लिए अपर्याप्त हैं। शिक्षण के दौरान यह जरूरी नहीं कि प्रदर्शन बेहतर ही हो.

स्तर 3: व्यवहार

स्तर 3 पर, हम सीखने के आवेदन और कार्यान्वयन को मापते हैं – नौकरी के दौरान व्यवहार में आए परिवर्तन. इन उपायों को अंतराल (जैसे, 3 महीने, 6 महीने, 1 वर्ष) पर दोहराना सही होता है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे कम नहीं हुए हैं.

सर्वोत्तम स्तर 3 के आकलन में अधिक वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन के लिए – एक पर्यवेक्षक, संरक्षक, या सहकर्मी – द्वारा शिक्षार्थी के व्यवहार का मूल्यांकन शामिल है. इस प्रकार के मूल्यांकन में प्रत्यक्ष अवलोकन, एक साक्षात्कार, एक कौशल प्रदर्शन, ड्रिल या कौशल परीक्षण का दूसरा रूप शामिल हो सकता है. मोबाइल ऐप की सहायता से जैसे प्रशिक्षण के बाद के आकलन को ट्रैक कर सकते हैं.

स्तर 4 : परिणाम

क्या कर्मचारी के व्यवहार में बदलाव से संगठन के लिए औसत दर्जे का लाभ होता है? क्या आप इन व्यवहार परिवर्तनों के मूल्य को माप सकते हैं? आपके मेट्रिक्स आपके सीखने के उद्देश्यों से जुड़े रहेंगे। सीखने के उद्देश्यों को समग्र रूप से संगठन पर लक्षित एक प्रभाव उद्देश्य में बदलना चाहिए। क्या आपके द्वारा सिखाए जा रहे व्यवहारों से जुड़ा कोई ठोस डेटा है?

उदाहरण के लिए, यदि आपका सीखने का उद्देश्य एक प्रभावी कर्मचारी प्रदर्शन समीक्षा करना है, तो संगठनात्मक लक्ष्य वर्ष के अंत तक कर्मचारी समीक्षाओं को सफलतापूर्वक पूरा करना या अधिक सकारात्मक कार्य वातावरण बनाना और इस प्रकार कर्मचारी कारोबार को कम करना हो सकता है.

VI. वर्तमान ज्ञान प्रणाली के साथ भारतीय ज्ञान प्रणाली, भाषा, मूल्यों और संस्कृति को एकीकृत करना

1. प्रो. मनीषा दुबे — अध्यक्ष
2. डॉ. नीलकंठ पाणिग्रही — सदस्य
3. डॉ. एम.एन. त्रिपाठी — सदस्य
4. डॉ. रमेश गोहे — सदस्य
5. डॉ. सुजीत मिश्रा — सदस्य

6. डॉ. शालिनी मेनन सदस्य

प्रचार के लिए रणनीतियाँ और कार्य योजना के लिए

वर्तमान ज्ञान प्रणाली के साथ भारतीय ज्ञान प्रणाली, भाषा, मूल्यों और संस्कृति को एकीकृत करना

समग्र व्यक्तित्व विकास:

• सभी कार्यक्रमों में 40 प्रतिशत अनुभवात्मक शिक्षण को शामिल करके शिक्षा को अधिक अनुभवात्मक बनाने के लिए शिक्षाशास्त्र;

• छात्रों के समग्र विकास को बढ़ावा देने के लिए शिक्षकों और अभिभावकों को संवेदनशील बनाना;

• सभी क्षेत्रों में बहु-विषयक शिक्षा को बढ़ावा देना;

• पेशेवर विकास के साथ शिक्षकों के प्रशिक्षण को बदलना

कौशल, मूल्य और व्यवहार:

- बेहतर रोजगार योग्यता के लिए छात्रों और शिक्षकों के कौशल का खाका तैयार करना;

• अधिक व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम स्थापित करना;

• अल्पकालिक कौशल आधारित कार्यक्रम शुरू करना;

• बहुविषयक कौशल घटक को एकीकृत करने के लिए पाठ्यक्रम में संशोधन;

• सभी विषयों में छात्रों और शिक्षकों को प्रदान किए जाने वाले पेशेवर और जीवन कौशल के सेट की पहचान करना;

• स्थानीय क्षेत्र में छात्रों की रोजगार योग्यता के कौशल आधार में सुधार करना;

• भारतीय रंग के मूल्यों/लोकाचार/कला/परंपराओं पर प्रशिक्षण।

• पाठ्यचर्या विकास कार्यशालाओं के माध्यम से नैतिकता, संवैधानिक मूल्यों और भारतीय संस्कृति, कला और विरासत के प्रति सम्मान में निहित पाठ्यचर्या को बढ़ावा देना।

भारतीय संस्कृति, सभ्यता और कला:

• पाठ्यक्रम में पारंपरिक भारतीय ज्ञान, विरासत और मूल्यों को शामिल करना;

• वन संसाधनों के संबंध में जनजातीय ज्ञान, कला और मूल्यों को शामिल करना, तैयारी के तरीके, मूल्य संवर्धन, जीवन और आजीविका से संबंधित, स्वास्थ्य और उपचार।

• भारतीय ज्ञान प्रणाली को वर्तमान ज्ञान क्षेत्र के साथ एकीकृत करके क्रॉस-डिसिप्लिनरी और अंतःविषय अनुसंधान की संस्कृति को बढ़ावा देना।

• भारतीय संस्कृति, मूल्यों और कला के विभिन्न पहलुओं पर छात्रों को परिचित कराने के लिए पाठ्यक्रमों का परिचय।

• भारतीय कला और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं से संबंधित भारतीय भाषाओं में शिक्षण और अनुसंधान को प्रोत्साहित करना;

• भारतीय लोकाचार पर आधारित संगीत, ललित कला, अनुवाद और व्याख्या, तुलनात्मक साहित्य, दर्शन और प्रदर्शन कला विभागों का परिचय।

• भारतीय खेलकूद, नृत्य, संगीत, फोटोग्राफी और ललित कलाओं को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न छात्र क्लबों की स्थापना।

भारतीय भाषाएं

• भारतीय भाषाओं में विभागों और कार्यक्रमों का परिचय;

• शिक्षण और सीखने को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय शास्त्रीय भाषा संस्थानों के साथ विभागों का समन्वय;

• पाली, फारसी और प्राकृत भाषाओं के लिए संस्थान/केंद्र स्थापित करना और इन संस्थानों/केंद्रों को अन्य विश्वविद्यालय विभाग/केंद्रों के साथ एकीकृत करना।

• भारतीय भाषाओं में अध्यापन में आवश्यक सहायता के लिए विभिन्न राष्ट्रीय मिशनों के साथ समन्वय स्थापित करना;

• चयनित विभागों और केंद्रों में भाषा के विकल्पों में से एक के रूप में संस्कृत को बढ़ावा देना।

समय योजना:

अल्पकालिक लक्ष्य (<2 वर्ष)

• सभी शिक्षण विभागों को भारतीय लोकाचार, मूल्यों और भारतीय विचारकों के योगदान को विभिन्न कार्यक्रमों के अपने-अपने पाठ्यक्रमों में शामिल करना है।

• विभागों/केंद्रों को विकसित किया जाना है और शिक्षा को भारतीय दृष्टिकोण से अधिक अनुभवात्मक और समग्र बनाने के लिए अपने पाठ्यक्रम में नए शिक्षाशास्त्र को शामिल किया जाएगा।

• पाठ्यचर्या सामग्री को इस तरह से विकसित किया जाना चाहिए ताकि प्रत्येक कार्यक्रम में छात्र न केवल मूल पाठ्यक्रम सीख सकें, बल्कि महत्वपूर्ण सोच के लिए जगह भी प्राप्त कर सकें और यह सीख सकें कि कैसे पूछताछ, खोज, चर्चा, लिखना और विश्लेषण करना है। ये कौशल समग्र विकास के लिए आवश्यक हैं।

• नई शिक्षा नीति में मानव निर्माण राष्ट्र निर्माण शिक्षा पर बल दिया गया जहां शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। इस संदर्भ में, शिक्षण के साथ भारतीय खेल और कौशल का एकीकरण समग्र विकास, शारीरिक और मनोवैज्ञानिक कल्याण को बढ़ावा देगा और संज्ञानात्मक क्षमताओं को भी बढ़ाएगा।

• विश्वविद्यालय का कम से कम प्रत्येक स्कूल/विभाग सभी सेमेस्टर में एक मूल्य वर्धित पाठ्यक्रम का प्रस्ताव करेगा जिसमें भारतीय ज्ञान प्रणाली, भाषा, मूल्य, संस्कृति शामिल है और इसे इंडोलॉजी, भारतीय भाषाओं, चिकित्सा की आयुष प्रणालियों से संबंधित वर्तमान ज्ञान प्रणाली के साथ शामिल किया जाएगा। आधुनिक भारत के साथ योग, कला, संगीत, इतिहास, संस्कृति आदि।

• छात्रों के कौशल को उन्नत करने के लिए प्राचीन से आधुनिक भारत में खेल, नृत्य, संगीत, फोटोग्राफी, ललित कला, रंगमंच, एनीमेशन और डिजाइनिंग को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न क्लबों की स्थापना।

• डिग्री कार्यक्रम के लिए पाठ्यक्रम तैयार करना, निर्धारित पाठ्यक्रम में कार्यक्रम के प्रत्येक पाठ्यक्रम में विषय विशिष्ट भारतीय मूल्य, भारतीय संस्कृति, भारतीय इतिहास और संबंधित पाठ्यक्रम से संबंधित भारतीय मूल को पाठ्यक्रम की पहली इकाई (या कम से कम पहली इकाई का हिस्सा) के रूप में शामिल किया गया है। • भारतीय ज्ञान प्रणाली, भाषा, मूल्यों और संस्कृति पर आधारित सम्मेलनों/कार्यशालाओं का आयोजन।

• मानवतावादी, नैतिक, संवैधानिक और सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों के विकास सहित मूल्य-आधारित शिक्षा पर एक पाठ्यक्रम प्रदान करना।

• भारतीय भाषाओं, कला और संस्कृति का अध्ययन करने के लिए सभी उम्र के लोगों के लिए विशेष छात्रवृत्ति शुरू करना।

छात्रों को कार्यक्रम की कुल अवधि के भीतर यूजीसी द्वारा अनुमोदित ऑनलाइन पाठ्यक्रमों / एमओओसी द्वारा प्रदान किए गए यूजी स्तर पर मूल्य वर्धित बकेट पाठ्यक्रमों में से कम से कम 2 क्रेडिट अर्जित करने होंगे जो उम्मीदवारों की अंतिम प्रगति रिपोर्ट में परिलक्षित होंगे। प्रत्येक सेमेस्टर के प्रारंभ में पाठ्यक्रमों की उपलब्धता की घोषणा की जाएगी जिसमें विद्यार्थी उपयुक्त सेमेस्टर में अपनी पसंद के अनुसार पाठ्यक्रम ले सकें।

विज्ञान, प्रौद्योगिकी और साहित्य के क्षेत्र में हमारे प्राचीन योगदान को बढ़ावा देने के लिए प्रत्येक संबंधित विभाग विषय के ज्ञान को बढ़ावा देने में हमारे पूर्वजों की उपलब्धियों को प्रदर्शित करने के लिए अपने विभाग में एक समर्पित स्थान विकसित कर सकते हैं। यह एक चित्र गैलरी, मॉडल प्रदर्शनी या सचित्र विवरण के रूप में हो सकता है।

विद्यार्थियों को पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रम के प्रत्येक विषय में भारतीय विद्वानों / वैज्ञानिकों के योगदान को उनके पाठ्यक्रम में शामिल कर सकते हैं 1

मध्यावधि लक्ष्य (<3 वर्ष)

• छात्रों को पीएचडी के लिए पंजीकरण करने की अनुमति देकर उनके मूल विषयों के अलावा अन्य विषयों के कार्यक्रम के साथ पार अनुशासनिक और अंतरानुशासनिक शोध की संस्कृति को बढ़ावा देना।

• छात्रों को कला, रचनात्मकता और क्षेत्र/देश की समृद्ध विरासत से रूबरू कराने के लिए कलाकारों/लेखकों को आवासीय कार्यक्रम का संस्थान बनाना।

- कला और संग्रहालय प्रशासन, कलाकृतियों के संरक्षण, ग्राफिक डिजाइन और वेब डिजाइन में कार्यक्रम/डिग्री।

दीर्घकालिक लक्ष्य (<5 वर्ष)

• चरित्र निर्माण और समग्र व्यक्तित्व का विकास आधुनिक युग की आवश्यकता है। इसलिए, विभिन्न कौशल जैसे संचार, भाषाओं में प्रवीणता, कंप्यूटर प्रौद्योगिकी, और विमर्श करने के लिए कौशल, प्रश्न पूछने के लिए मूल्य वर्धित पाठ्यक्रम।

• इसके लिए विभिन्न क्षेत्रों में माता-पिता, समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के साथ कार्यशाला और संवादात्मक सत्रों की व्यवस्था की जानी है ताकि छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षक और अभिभावक साथ-साथ काम करें।

• कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान स्कूल को पाठ्यक्रम में आदिवासी और स्वदेशी ज्ञान सहित पारंपरिक भारतीय ज्ञान को शामिल करना चाहिए। प्रासंगिक 22 दीर्घकालिक (5-10 वर्ष)

• पाली, फारसी और प्राकृत भाषाओं के लिए संस्थान/केंद्र स्थापित करना।

• एनईपी-2020 में परिकल्पित भारतीय ज्ञान प्रणालियों, भाषाओं, संस्कृति और मूल्यों को बढ़ावा देने से संबंधित लक्ष्यों का कार्यान्वयन। पारंपरिक भारतीय ज्ञान के घटकों को विज्ञान, ललित कला, खेल आदि विषयों में भी शामिल किया जा सकता है।

• सभी ज्ञान की एकता और अखंडता सुनिश्चित करने के लिए विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला, मानविकी और खेल में बहु-विषयक और समग्र शिक्षा।

• विश्वविद्यालय के शिक्षकों को भारतीय भाषाओं में अध्यापन में आवश्यक सहायता के लिए राष्ट्रीय परामर्श मिशन के साथ समन्वय।

• मातृभाषा, पड़ोसी और राष्ट्रीय भाषा सहित 3-भाषा के फॉर्मूले में संस्कृत को भाषा के विकल्पों में से एक के रूप में बढ़ावा देना।

• शैक्षिक प्रणाली में अभिसरण की एक प्रक्रिया बनाने के लिए भारतीय भाषाओं, तुलनात्मक साहित्य, रचनात्मक लेखन, कला, संगीत, लोक साहित्य, लोक साहित्य, मौखिक साहित्य, दर्शन में विभिन्न विभागों और कार्यक्रमों का परिचय।

वर्तमान ज्ञान प्रणाली के साथ भारतीय ज्ञान प्रणाली, भाषा, मूल्यों और संस्कृति को एकीकृत करने के लिए यह प्रस्तावित है कि गुरु घासीदास विश्वविद्यालय द्वारा प्रस्तावित 8 सेमेस्टर स्नातक पाठ्यक्रमों में निम्नलिखित योजना को पाठ्यक्रम में लागू किया जा सकता है-

प्रथम वर्ष		द्वितीय वर्ष		तृतीय वर्ष		चतुर्थ वर्ष	
प्रथम सेम.	द्वितीय सेम.	तृतीय सेम.	चतुर्थ सेम.	पंचम सेम.	षष्ठ सेम.	सप्तम सेम .	अष्टम सेम.
सामान्य हिंदी	सामान्य अंग्रेजी	सामान्य हिंदी	सामान्य अंग्रेजी	भारतीय कला और पुरातत्व	भारतीय पारंपरिक संस्कृति	ज्ञान प्रणाली	जीवन लोकाचार

समग्र शिक्षा

मुख्य शिक्षण

भावनात्मक विकास

शिष्टाचार

महत्वपूर्ण विचार कौशल

संघर्ष समाधान कौशल

चरित्र निर्माण

स्वस्थ सामाजिक कौशल

शिष्टाचार

व्यावहारिक पाठ

7. उच्च शिक्षा का अंतर्राष्ट्रीयकरण

1. प्रो. अमित सक्सेना	अध्यक्ष
2. प्रो. मनीष श्रीवास्तव	सदस्य
3. प्रो. वी.डी. रंगारी	सदस्य
4. डॉ. पी.पी. मूर्ति	सदस्य
5. डॉ. दिलीप पाल	सदस्य
6. डॉ. एस.के. शाही	सदस्य
7. डॉ. एच.एस. तिवारी	सदस्य

उच्च शिक्षा के अंतर्राष्ट्रीकरण को बढ़ावा देने के लिए रणनीतियां और कार्य प्रचार के लिए रणनीतियाँ और कार्य योजनाएं

प्रस्तावना

उच्च शिक्षा का अंतर्राष्ट्रीयकरण विविध शिक्षा प्रणालियों के बीच बातचीत के माध्यम से सर्वोत्तम शैक्षणिक और अनुसंधान प्रथाओं को साझा करने को बढ़ावा देता है, तथा विद्यार्थियों और विद्वानों की गतिशीलता के माध्यम से वैश्विक नागरिकों को विकसित करने में मदद करता है। उच्च शिक्षा का अंतर्राष्ट्रीयकरण शिक्षा की गुणवत्ता तक पहुँचाने के लिए वैश्वीकरण की एक प्रतिक्रिया है, ताकि शिक्षा की गुणवत्ता को वैश्विक मानकों तक पहुँचाने के लिए पाठ्यक्रम के संरेखण के साथ एक वैश्वीकृत प्रतिस्पर्धी अर्थव्यवस्था में उत्पादकता में सुधार के लिए कौशल के

प्रकार को स्थापित किया जा सके। अंतरराष्ट्रीय छात्रों, शिक्षाविदों और वित्त पोषण को आकर्षित करने के अवसर बढ़ रहे हैं और कई भारतीय उच्च शिक्षा संस्थान विश्व रैंकिंग में अब अपनी वैश्विक पहुंच बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध हैं तथा कुछ पहले ही विश्वविद्यालयों की विश्व रैंकिंग में शामिल हो चुके हैं। क्यूएस 2022 वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग में 35 संस्थानों ने रैंकिंग में स्थान प्राप्त किया है और 63 उच्च शिक्षा संस्थानों ने टाइम्स हायर एजुकेशन (टीएचई) वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2021 में स्थान प्राप्त किया है। हालांकि,अधिक महत्वपूर्ण यह है कि इन रैंकिंग में समान रूप से अच्छा प्रदर्शन करने के लिए कई और भारतीय उच्च शिक्षा संस्थाओं की गुप्त क्षमता पर ध्यान केंद्रित किया जाए. विद्यार्थियों की गतिशीलता, उच्च शिक्षा के अंतर्राष्ट्रीयकरण का सबसे स्पष्ट/ दृश्यमान पहलू है अपने देश के बाहर उच्च शिक्षा में नामांकित विद्यार्थियों की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई है और यह प्रवृत्ति जारी रहने की संभावना है। भारत विदेशी कॉलेज उम्मीदवारों के सबसे बड़े वैश्विक पूलों में से एक है। दिसंबर 2020 तक, भारत में 10 लाख से अधिक छात्र विदेशों में पढ़ रहे थे (एमईए 2021)। हालांकि, उच्च शिक्षा पर अखिल भारतीय सर्वेक्षण (एआईएसएचई) 2019-2020 के अनुसार उच्च शिक्षा के उद्देश्य से भारत आने वाले विदेशी छात्रों की संख्या 49,348 है।

नई शिक्षा नीति 2020 और अंतर्राष्ट्रीयकरण

पहुंच, समानता, गुणवत्ता, वहनीयता और जवाबदेही के मूलभूत स्तंभों पर बनी राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में "अग्रणी सुधारों की सिफारिश की गई है, जिसका उद्देश्य हमारे छात्रों, शिक्षकों और शैक्षणिक संस्थानों को सही दक्षताओं और क्षमताओं से लैस करके, एक बेहतर शिक्षा नीति बनाना है। एक जीवंत, नए भारत के लिए शिक्षा पारिस्थितिकी तंत्र को सक्षम और पुनर्जीवित करना है"। उच्च शिक्षा नीति व्यापक रूप से उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में उच्चतम वैश्विक मानकों को प्राप्त करने पर केंद्रित है। इसके अलावा, यह अधिक से अधिक अंतर्राष्ट्रीय छात्रों को आकर्षित करने और "घर पर अंतर्राष्ट्रीयकरण" के लक्ष्य को प्राप्त करने की आवश्यकता को पुष्ट करता है। यह नीति भारत को "वैश्विक अध्ययन के राह के रूप में बढ़ावा देने की महत्वपूर्ण आवश्यकता की सराहना करता है जो सस्ती कीमत पर प्रीमियम शिक्षा प्रदान करती है जिससे विश्व गुरु के रूप में भारत को अपनी भूमिका को बहाल करने में मदद मिल पाए।"

उद्देश्य

•भारत को विदेशी छात्रों के लिए एक आकर्षक अध्ययन स्थल बनाना।

•हमारे संकाय और छात्रों में अंतरराष्ट्रीय दक्षताओं को बढ़ावा देने के लिए।

• हमारे शिक्षार्थियों की वैश्विक मानसिकता विकसित करना और उन्हें भारतीय होने के गहरे गर्व के साथ वैश्विक नागरिकों के रूप में आकार देना

•भारतीय और विदेशी उच्च शिक्षा संस्थानों के बीच सक्रिय संबंध को बढ़ावा देना।

•अंतर्राष्ट्रीयकरण संकेतकों में वैश्विक रैंकिंग में सुधार करना।

सामरिक कार्यक्रम और पहल

इन उद्देश्यों को प्राप्त करने और हमारी उच्च शिक्षा प्रणाली की पूरी क्षमता का उपयोग करने के लिए, एक रणनीतिक दृष्टिकोण विकसित करने की आवश्यकता है। संस्था और नियामक/सरकारी दोनों स्तरों पर महत्वपूर्ण पहल करने की आवश्यकता है।राष्ट्रीय नीति और संस्थागत रणनीति के बीच यह तालमेल उच्च शिक्षा के अंतर्राष्ट्रीयकरण पर बल देगा।

• घर पर अंतर्राष्ट्रीयकरण

• जोड़ने की व्यवस्था के तहत क्रेडिट मान्यता

•वैश्विक नागरिकता दृष्टिकोण

• आईसीटी आधारित अंतर्राष्ट्रीयकरण

• शैक्षणिक और अनुसंधान सहयोग

• विदेश में ब्रांड बिल्डिंग

• पूर्व छात्रों को जोड़ना

•अंतर्राष्ट्रीय मामलों के लिए कार्यालय

सामरिक योजनाएं और लक्ष्य

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर में उच्च शिक्षा के अन्तर्राष्ट्रीयकरण को बढ़ावा देने के लिए निम्नलिखित पहल की जा सकती है:

सीधे पीएच.डी. विदेशी छात्रों के लिए पंजीकरण (विदेशी छात्रों के लिए सीटों का आवंटन) – विदेशों के छात्रों को गुरु घासीदास विश्वविद्यालय के विभिन्न अध्ययन स्कूलों / विभागों में पीएचडी कार्यक्रमों के लिए पंजीकरण के लिए आमंत्रित किया जा सकता है। भारत सरकार में या आवेदन करने वाले देशज छात्रों के लिए उपलब्ध कई फैलोशिप / छात्रवृत्ति का उपयोग विदेशी छात्रों को आकर्षित करने के लिए किया जा सकता है ताकि वे विश्वविद्यालय में अपने पीएचडी कार्यक्रमों के लिए आयें। इससे यहां डिग्री हासिल करने में उनका आर्थिक बोझ भी कम होगा। उनकी भाषा संबंधी समस्याओं या शिकायतों को समझने के लिए लॉजिस्टिक्स/विशेष काउंटर जैसे कुछ विशेष विशेषाधिकार/छूट दी जा सकती है।

अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के साथ संयुक्त अनुसंधान सहयोग को प्रोत्साहित करने के लिए – इस पहल के तहत, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय के शिक्षक/विद्वान संयुक्त रूप से शोधपत्र लेखन, सम्मेलनों, व्याख्यान, वेबिनार, संयुक्त प्रॉजेक्ट्स जैसे अनुसंधान उद्देश्यों हेतु विदेश के साथ बातचीत कर सकते हैं। समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर कर सकते हैं।

यूजीसी, एसईआरबी, डीबीटी, एआईसीटीई, आयुष मंत्रालय जैसी विभिन्न भारत सरकार की फंडिंग एजेंसियां संयुक्त राज्य अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, स्वीडन, कोरिया आदि जैसे अन्य उन्नत देशों के साथ संयुक्त सहयोग अनुसंधान परियोजना के लिए विज्ञापन प्रदान करती हैं, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, इस प्रकार के द्विपक्षीय कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए भी प्रोत्साहित कर सकता है। /अंतर्राष्ट्रीय परियोजनाओं और आवेदन प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाने के लिए एक सेल बनाया जाए ताकि एक देश से दूसरे देश के आधिकारिक मामले / बातचीत / इससे संबंधित समस्याएं विश्वविद्यालय स्तर पर आसानी से हल हो सकें। इस तरह से भी अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बिना वित्तीय बोझ को भी हल किया जा सकता है।

अकादमिक और अनुसंधान एवं विकास सहयोग के लिए हमारे संस्थान और प्रसिद्ध अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के बीच समझौता ज्ञापन (एमओयू) को प्रोत्साहित करने के लिए– जैसा कि उल्लेख किया गया है, एमओयू, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय और विदेशी संस्थानों के बीच महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। यह हमारे

संकाय/विद्वानों/छात्रों की भागीदारी (एमओयू) विदेशी संस्थानों के साथ को बढ़ावा देगी। इससे संस्थानों के बीच अनुसंधान के माहौल में सुधार होगा। इस पहल के माध्यम से शोधकर्ताओं की गतिशीलता भी बढ़ेगी।

अंतरराष्ट्रीय छात्रों के लिए अकादमिक/कैरियर परामर्श सहायता डेस्क स्थापित करने के लिए–

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय में इसके लिए एक अलग हेल्प डेस्क बनाया जा सक ता है जो गुरु घासीदास विश्वविद्यालय में संकाय/शोधकर्ताओं या विदेशी छात्र, जो यहां अथवा वहीं से अपना शोध करना चाहते हैं, उनके द्वारा सुझाए गए सभी मुद्दों, पदोन्नति और पहलुओं को हल करने का कार्य करेगा। गुरु घासीदास विश्वविद्यालय के ऐसे सर्वश्रेष्ठ छात्र, जो विदेशी विश्वविद्यालय में पढ़ना चाहते हैं, उन्हें भी यह डेस्क नके लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए मार्गदर्शन/परामर्श दे सकता है।

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय का एक ई–लेटर शुरू करने के लिए–

सोशल मीडिया, संस्थानों की वेबसाइट और पूर्व छात्र संघ के माध्यम से गुरु घासीदास विश्वविद्यालय में अकादमिक, रिसर्च एंड डेवलपमेंट उपलब्धियों और गुरु घासीदास विश्वविद्यालय में विदेशी छात्रों के अवसरों को उद्धृत करने के लिए विश्वविद्यालय से एक ई–पत्र शुरू किया जा सकता है। जिसे, प्रचार, विज्ञापन, पोस्टर, हेल्प डेस्क या विश्वविद्यालय में महत्वपूर्ण स्थानों पर चिपकाया जा सकता है। ई–पत्र उन सभी हितधारकों को भेजा जा सकता है जो गुरु घासीदास विश्वविद्यालय में या विदेश में विदेशी अध्ययन के बारे में जानना चाहते हैं।

संस्थानों द्वारा धारणा निर्माण अभ्यास के लिए विदेशों/संस्थानों में स्थापित हमारे पूर्व छात्रों का समर्थन लेने के लिए–

ऐसे कई छात्र हैं जो गुरु घासीदास विश्वविद्यालय से पास हुए हैं और वे विदेशों में कार्यरत हैं। वे स्वयं गुरु घासीदास विश्वविद्यालय में अपनी उच्च शिक्षा का अध्ययन लेना पसंद कर सकते हैं, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय उन्हें अपना कार्य पूर्ण करने और डिग्री प्राप्त करने के लिए मंच प्रदान कर सकता है। दूसरे, विदेश में बसे पूर्व छात्र अपने कार्यस्थल पर गुरु घासीदास विश्वविद्यालय द्वारा प्रस्तावित अध्ययन कार्यक्रम का प्रचार कर सकते हैं या वे गुरु घासीदास विश्वविद्यालय को इस बारे में सूचित कर सकते हैं कि हमारे छात्र वहां कैसे अध्ययन कर सकते हैं। उन स्थानों के स्थानीय होने के कारण, पूर्व छात्र अपने स्थानों की स्थितियों को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं और गुरु घासीदास विश्वविद्यालय में वे हमारे छात्रों को यथार्थवादी सुझाव दे सकते हैं कि वे विदेश में कैसे अध्ययन कर सकते हैं। इसी तरह वे विदेशी छात्रों को समझा सकते हैं कि वे गुरु घासीदास विश्वविद्यालय में कैसे रह सकते हैं और अपना डिग्री प्रोग्राम पूरा कर सकते हैं। लोग हमारे पूर्व छात्रों को पारंपरिक पोस्टरों/ईमेलों की तुलना में अधिक विश्वास करेंगे।

एक अलग कार्यालय बनाना– गुरु घासीदास विश्वविद्यालय में उच्च शिक्षा के अंतर्राष्ट्रीयकरण को बढ़ावा देने के लिए ऊपर उल्लिखित कई रणनीतिक योजनाओं की आवश्यकता है, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय में एक अलग, पूर्ण रूप से समर्पित कार्यालय की आवश्यकता होगी। कार्यालय पूरी तरह से लक्ष्य से संबंधित सभी गतिविधियों/पत्राचारों/सहायता आदि के लिए समर्पित होगा (उच्च शिक्षा के अंतर्राष्ट्रीय मामलों के लिए प्रकोष्ठ)। विदेशी संस्थानों/पूर्व छात्रों से नियमित रूप से संपर्क करने के लिए कार्यालय को एक फोन, इंटरनेट के साथ डेस्कटॉप, प्रिंटर और अन्य सुविधाएं उपलब्ध करायी जानी चाहिए।

अंतर्राष्ट्रीय छात्र नीति– चूंकि अनुसंधान समुदाय के आदान–प्रदान को बढ़ावा देने के लिए कुछ विशेषाधिकारों/छूट के साथ पहली बार अध्ययन के अंतःविषय कार्यक्रम शुरू किए जाएंगे, एक अलग नीति तैयार की जानी चाहिए और जीजीवी में अकादमिक सक्षम निकाय द्वारा अनुमोदित किया जाना चाहिए ताकि अंतरराष्ट्रीय संस्थानों को

प्रेरित और सुविधा प्रदान की जा सके, ऐसे अकादमिक और अनुसंधान एवं विकास सहयोग के लिए संकाय और छात्र।

पदोन्नति की रणनीति– हमारे छात्रों को विदेशी संस्थानों में अध्ययन के लिए बढ़ावा देने के लिए गुरु घासीदास विश्वविद्यालय द्वारा की जा रही पहल और इसके विपरीत सोशल मीडिया (फेसबुक, वेबसाइट, समाचार पत्र आदि) द्वारा प्रचारित किया जाएगा ताकि प्रस्तावों, फेलोशिप आदि के लिए गोल्सकेम्स कॉल्स का अधिकतम लाभ उठाया जा सके। विदेशी छात्रों के प्रवेश की दिशा में गुरु घासीदास विश्वविद्यालय की नीति को नवीनतम संदर्भ में बढ़ाया जा सकता है।

कुछ स्वतंत्रताओं के साथ एक सकारात्मक मानसिकता लक्ष्य प्राप्ति में एक सहायक कारक होगी।

VIII. शिक्षण,अनुसंधान और नवाचार को रैंकिंग के साथ जोड़ना

1-	प्रो. पी. के. बाजपेयी	अध्यक्ष
2.	प्रो. एल.वी. के एस भास्कर	सदस्य
3.	डॉ. रेणु भट्ट	सदस्य
4.	डॉ. के. के. चंद्रा	सदस्य
5.	डॉ. पुष्पराज सिंह	सदस्य

शिक्षण, अनुसंधान और नवाचार के प्रचार के लिए रैंकिंग के साथ रणनीतियाँ और कार्य योजना का तालमेल

उद्देश्य :

शिक्षाविदों के साथ-साथ अनुसंधान में सीखने के परिणामों के संदर्भ में गुणवत्ता सुधार प्राप्त करने के लिए, हमें पाठ्यक्रम डिजाइन, शिक्षण शिक्षण और मूल्यांकन सहित हमारी उच्च शिक्षा के सभी पहलुओं को इस तरह से समन्वयित करके नवाचार को विकसित करना होगा और समग्र रूप से आगे बढ़ना होगा ताकि अनुसंधान डिजाइन और पद्धतियों, सामुदायिक पहुंच और विस्तार गतिविधियों को अनुभवात्मक अधिगम के लिए शिक्षण उपकरण के रूप में एकीकृत किया गया है। अनुसंधान अनुभव और डिजिटल लर्निंग प्लेटफॉर्म, डिसिमिनेशन और प्रकाशन प्रथाएं, व्यावसायिक प्रशिक्षण, छात्र प्लेसमेंट और उच्च शिक्षा की ओर आंदोलन, संकाय क्षमता संवर्धन, छात्र और शिक्षक आदान-प्रदान कार्यक्रम, मान्यता के साथ-साथ राष्ट्रीय रैंकिंग मानदंड के साथ संरेखित हैं, इसी तरह, संस्थान विकास कार्यक्रम और हमारे विश्वविद्यालय की अन्य दीर्घकालिक रणनीतियों को इन उन्नति और विस्तार के साथ समन्वित किया जाना चाहिए।

प्रारंभ में, इस तरह के तालमेल के लिए निम्नलिखित को प्राथमिक तत्व माना गया है।

ये हैं-

अनिवार्य इंटर्नशिप:

एनईपी 2020 शिक्षण सीखने की प्रक्रिया के अनुसार, शिक्षार्थियों को बेहतर सीखने का अनुभव प्रदान करने के लिए शोधकर्ताओं को सिंक्रनाइज़ किया जाना है। इस बात पर और जोर दिया जाता है कि शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं को नवोन्मेषी बनाया जाना चाहिए। राष्ट्रीय कौशल और व्यावसायिक पाठ्यक्रम ढांचे के साथ शिक्षण और अनुसंधान को प्रभावी ढंग से सिंक्रनाइज़ करने के लिए, यह आवश्यक है कि इंटर्नशिप कार्यक्रम को प्रभावी ढंग से लागू किया जाए और रचनात्मक इंटर्नशिप अनुभव के लिए नवीन विचारों को पेश किया जाए।

इसलिए निम्नलिखित रणनीतियों का सुझाव दिया जाता है-

- सेवा/सामुदायिक सेवा कार्यक्रमों के लिए 02 क्रेडिट प्रदान करना।
- इंटर्नशिप सिखाने के लिए नजदीकी सरकारी/निजी स्कूलों के साथ संपर्क करना।
- स्थानीय उद्योग के साथ इंटर्नशिप के अवसर पैदा करना।
- पाठ्यक्रम में अनुसंधान और इंटर्नशिप के घटक को शामिल करना।
- परियोजना-कार्य/निबंध/इंटर्नशिप उद्योग के सहयोग से आयोजित किया जा सकता है।

आइडिया ऊष्मायन:

इनक्यूबेशन सेंटर को छात्रों और फैकल्टी के विचारों को प्रेरित करने और इनक्यूबेट करने में अधिक सक्रिय होना चाहिए और प्रौद्योगिकी विकास केंद्र और प्रौद्योगिकी सक्षम केंद्र के साथ-साथ केंद्रीय अनुसंधान सुविधा के साथ तालमेल बिठाना चाहिए ताकि आवश्यक प्रौद्योगिकी विकास, परिनियोजन और व्यावसायीकरण सहायता प्रदान की जा सके, शिक्षार्थियों को स्टार्टअप में विचार परिवर्तित किया जा सके।

उद्योग इंटरफेस सेल और इनक्यूबेशन सेंटर को प्रौद्योगिकी समकक्ष उद्योग विशेषज्ञ संगठन, संस्थान नेटवर्क का एक पूल भी बनाना चाहिए जो छात्र और संकाय द्वारा स्टार्टअप स्थापित करने के लिए उद्यमी विकास, विपणन रणनीति प्रदान करने में भागीदार हो सके।

सरकारी संगठन, कौशल विकास संगठन, उद्योग आदि के साथ प्रभावी साझेदारी, ताकि सीखने की गुणवत्ता में सुधार के साथ-साथ कौशल और उद्यमिता प्रशिक्षण को शामिल किया जा सके।

निम्नलिखित कार्य योजना का सुझाव दिया गया है:

अल्पकालिक (<2 वर्ष)

• प्रासंगिक पाठ्यक्रमों, उद्यमशीलता क्षमता, संचार, सॉफ्ट स्किल्स, महत्वपूर्ण सोच, समस्या समाधान, निर्णय लेने की क्षमता और मूल्य शिक्षा क्रेडिट में शामिल हैं।

• युवाओ को उद्यमिता और नवाचार में संभावनाओं और वास्तविकताओं से अवगत कराने के लिए विश्वविद्यालय के अंदर और बाहर छात्र विनिमय और संकाय विनिमय कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करें।

• इंटर्नशिप, सामुदायिक जुड़ाव, वयस्क और व्यावसायिक शिक्षा से संबंधित गतिविधियों को पढ़ाने के लिए पड़ोसी राज्य / निजी स्कूलों के साथ नेटवर्किंग।

• स्थानीय उद्योग, कंपनियों, कलाकारों और शिल्पकारों के साथ-साथ अन्य उच्च शिक्षा संस्थानों/अनुसंधान संस्थानों के साथ शोध इंटर्नशिप के साथ इंटर्नशिप संभावनाएं पैदा करना।

• परियोजना कार्य / शोध प्रबंध / इंटर्नशिप को उद्योग और अन्य विश्वविद्यालयों / अनुसंधान संस्थानों के सहयोग से किया जा सकता है।

• अनुसंधान और नवाचार के लिए संकाय और छात्रों को प्रोत्साहन प्रदान करना।

• पूर्वस्नातक कार्यक्रम में शोध और इंटर्नशिप घटक को शामिल करना।

• सेवा/सामुदायिक सेवा कार्यक्रमों के लिए 1-2 अतिरिक्त क्रेडिट प्रदान करना।

• छात्रों की आविष्कारशील पहलों के लिए नियमित प्रतियोगिताओं का संस्थानीकरण, साथ ही वार्षिक नवाचार पुरस्कार प्रदान करना।

• स्थानीय क्षेत्र की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए स्थानीय/जातीय/क्षेत्रीय खाद्य पदार्थों/पोशाक पर नवाचार को बढ़ावा देना।

• प्रासंगिक अनुसंधान के माध्यम से समाज की जरूरतों को पूरा करने के लिए अनुसंधान क्षेत्रों को प्राथमिकता देना।

• उद्योग और सेक्टर-कौशल परिषद के संयोजन में ऊष्मायन केंद्रों की स्थापना।

मध्यावधि (3-5 वर्ष)

• हमारे अनुसंधान को बढ़ाने और हमारे अनुसंधान की गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार करने के लिए हमारे अनुसंधान बुनियादी ढांचे को मजबूत करना।

• व्यापक, लक्ष्योन्मुखी और केंद्रित अनुसंधान नीतियों की स्थापना।

• संसाधन साझा करने और अवसर प्रदान करने के लिए अनुसंधान संस्थानों और वित्त पोषण निकायों के बीच सहयोग।

• अंतःविषय अनुसंधान के लिए सहयोगी अनुसंधान विधियों के माध्यम से अनुदान उपलब्ध हैं।

• नवोदित उद्यमियों को उनके नवोन्मेषी उपक्रमों को विकसित करने और अनुसंधान के व्यावसायीकरण के लिए पर्याप्त राशि के रूप में स्टार्टअप अनुदान प्रदान करना

• सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, एनसीईआरटी, एनसीटीई, आरसीआई, कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय जैसे मंत्रालयों/संगठनों/संस्थाओं के साथ सहयोग विकसित करना।

• देश के शीर्ष 50 विश्वविद्यालयों की एनआईआरएफ रैंकिंग।

• अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों में इंटर्नशिप के अवसरों की खोज करना।

•व्यावसायिक और व्यावसायिक कौशल परामर्श प्रदान करना।

• प्रमुख कौशल सेटों की लक्षित भर्ती के लिए उद्योग-विश्वविद्यालय इंटरफेस सेल की स्थापना।

लंबी अवधि (5-10 वर्ष)

• क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी और टाइम्स हायर एजुकेशन रैंकिंग जैसे वैश्विक प्रदर्शन तालिकाओं में भागीदारी के लिए शिक्षण, अनुसंधान, ज्ञान हस्तांतरण और अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण को सुव्यवस्थित करना।

• सभी पेशेवर डिप्लोमा, स्नातक और स्नातकोत्तर कार्यक्रमों का एनबीए प्रत्यायन।

• विश्वविद्यालय-व्यावसायिक अंतःक्रियाओं की एक विस्तृत श्रृंखला में उद्योग-विश्वविद्यालय अनुसंधान कार्य।

•, विश्वविद्यालय-व्यावसायिक अंतःक्रियाओं की एक विस्तृत श्रृंखला में उद्योग-विश्वविद्यालय अनुसंधान कार्य ।

• पूरे उद्यमशीलता की यात्रा को समर्थन देने के लिए नवाचारों और सामुदायिक इन्क्यूबेटरों से परिभाषित उद्योग ।

• सभी ज्ञान समाजों में नवाचारों और उद्यमिता विकास, आर्थिक विकास और प्रतिस्पर्धात्मकता के लिए अंतर-विश्वविद्यालय सहयोग।

• वैश्विक नवाचार परिदृश्य को नया आकार देने के लिए क्षेत्रीय/राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय नवाचार केंद्रों के साथ संबंध।

• मापने योग्य परिणामों के साथ अत्याधुनिक अनुसंधान, शिक्षण और विस्तार को बढ़ावा देने के लिए उत्कृष्टता केंद्र बनाना।

• जीजीवी को भविष्य के उच्च शिक्षा संस्थानों में बदलने के लिए वैश्विक मानकों से तैयार अनुसंधान, नवाचार और रैंकिंग के लिए शेष एनईपी-2020 उद्देश्यों का कार्यान्वयन।